अप्रैल 2004
Rs. 10 /-
चन्दामामा

चन्दामामा

प्रस्तुत करता है

"स्वप्न - बालक बनो" प्रतियोगिता

भारत के राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम बच्चों के साथ पारस्परिक क्रिया के क्रम में उन्हें भारत तथा भारतवासियों के भविष्य के लिए स्वप्न देखने की प्रेरणा देते रहे हैं। हाल में ही, २५ जनवरी को राष्ट्र के नाम सम्बोधन के बाद उन्होंने बच्चों के एक समूह को शपथ दिलायी। हमारे तरुण पाठकों को लिए दस-सूत्रीय शपथ नीचे दिया जा रहा है।

१. मैं अपनी शिक्षा अथबा कार्य को समर्पित भाव से आगे बढ़ाऊँगा और उसमें श्रेष्ठ बनूँगा।

२. मैं कम से कम दस अशिक्षित व्यक्तियों को लिखना और पढ़ना सिखाऊँगा ।

३. मैं कम से कम दस पौधे रोपूँगाऔर निरन्तर देखभाल करके उन्हें निश्चित रूप से बड़ा करूँगा।

४. मैं ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में जाकर कम से कम पाँच व्यक्तियों का ` व्यसन और जूए की आदत से स्थायी रूप से मुक्ति दिलाऊँगा।

५. मैं अपने दुखी भाई-बन्धुओं की पीड़ा दूर करने का निरन्तर प्रयाम करूँगा।

६. मैं किसी धार्मिक , जातिय तथा भाषा संबंधी मतभेद का समर्थन नहीं करूँगा।

७. मैं स्वयं ईमानदार रहूँगा और भ्रष्टाचार से मुक्त समाज के निर्माण का प्रयास करूँगा।

८. मैं एक प्रबुद्ध नागरिक बनने के लिए प्रयास करूँगा और अपने परिवार को सदाचारी बनाऊँगा।

९. मैं हमेशा उनका मित्र रहूँगा जो मानसिक और शरीरिक रूप से चुनौतीपूर्ण जीवन से गुजर रहे हैं और हम सब के समान ही सामान्य जीवन जीने के लायक उन्हें बनाने के लिए कठिन श्रम करूँगा।

१०. मैं अपने देश और उपने देशवासियों की सफलता पर गर्व के साथ आनन्दोत्सव मनाऊँगा।

चन्दामामा भारत के बच्चों का एक अनुच्छेद यह लिखने के लिए आमंत्रित करता है कि वे आगामी स्वतंत्रता दिवस तक दस सूत्रों को पूरा करने के लिए कितनी उपलब्धि की आशा करते हैं। यह प्रतियोगिता आठ से लेकर पन्द्रह वर्ष की आयु के बीच के बालक-बालिकाओं के लिए खुला है।

प्रतियोगिता में भाग लीजिए और पुरस्कार जीतिए।

ये तीन प्रविष्टियाँ हमारे **नवम्बर २००४** अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

अन्तिम तिथि
३१ अगस्त
२००४

सूचना और पुरस्कार संबंधी जानकारी के लिए मई २००४ अंक देखिए।

वे हमारे अन्तर में निवास करते हैं

लगभग ९२ वर्ष पूर्व आन्ध्रप्रदेश में कडप्पा जिले के एक अल्पज्ञात गाँव, पोट्टीपद्दु, में एक बालक का जन्म हुआ। गाँव के स्कूल में केवल रामायण, महाभारत तथा भागवतम जैसे महाकाव्यों की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षक बच्चों को बताते थे कि धर्मनिष्ठ जीवन कैसे जीना चाहिये। उन्हें महाकाव्यों तथा अन्य प्राचीन ग्रन्थों में निहित सत्यों को कण्ठस्थ करने के लिए परामर्श दिया जाता था।

वह बालक, नागिरेड्डी, बाद में मद्रास (अब चेन्नई) आ गया, जहाँ उसने कुछ वर्षों तक नियमित रूप से स्कूल में शिक्षा पाई। अध्ययन समाप्त होने से पहले ही उसे परिवार के निर्यात व्यापार में सम्मिलित होने के लिए बुला लिया गया।

तरुणाई में उन्हें देश के स्वाधीनता संग्राम ने आकृष्ट किया। उन्होंने खादी आन्दोलन में भाग लिया। लेकिन बर्मा में व्यापार की देखभाल करने के लिए उनकी आवश्यकता आ पड़ी।

जो भी हो, द्वितीय महायुद्ध के दौरान उनके व्यापार को भारी नुकसान उठाना पड़ा और उन्हें फिर से जिन्दगी शुरू करनी पड़ी। उन्होंने एक प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की जिससे इन्हें प्रकाशन के साहसिक कार्य आरम्भ करने की प्रेरणा मिली। उन्होंने एक सामाजिक-राजनैतिक पत्रिका 'आन्ध्र ज्योति' का प्रकाशन शुरू किया। उनका दूसरा साहसिक कार्य फिल्म-निर्माण करना था जिसके कारण वे श्री चक्रपाणि के सम्पर्क में आये। दोनों के मन में बच्चों के लिए एक पत्रिका निकालने का विचार आया और भारत की स्वाधीनता से एक महीना पूर्व चन्दामामा का जन्म हुआ।

श्री बी. नागिरेड्डी
२ दिसम्बर १९१२ - २५ फरवरी २००४

उनकी अगली गतिविधि चिकित्सा के क्षेत्र में थी। उन्होंने मद्रास में दो अस्पतालों की स्थापना की। नागिरेड्डी कठिन परिश्रम, सादगी और विनम्रता के लिए प्रसिद्ध थे। जीवन भर उनके सभी कर्म और बचन हमारे प्राचीन शास्त्रों से प्रभावित होते थे।

श्री बी. नागिरेड्डी को मुद्रण व प्रकाशन उद्योग और फिल्म संसार से अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए तथा आन्ध्र प्रदेश के दो विश्वविद्यालयों ने इन्हें डी. लिट् की मानद उपाधि से बिभूषित किया।

चन्दामामा, जो उनके सभी आदर्शों को प्रतिबिम्बित करता है, अपने संस्थापक के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि के रूप में बच्चों को मानव मूल्यों का सर्वश्रेष्ठ रूप निरन्तर प्रदान करता रहेगा।

चन्दामामा

सम्पुट - १०८ अप्रैल २००४ सञ्चिका - ४

विशेष आकर्षण

भल्लूक मांत्रिक १३

शिल्प योद्धा १९

विष्णु पुराण ४५

दैत्य ने खो दी अपनी आग ६७

अंतरंग

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

पत्थर भी कथा सुनाते हैं

भारत के राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम की अन्तर्दृष्टि में भारत सन् २०२० तक एक शक्तिशाली राष्ट्र बन जायेगा। तब तक आज के बच्चे अपनी युवावस्था के उत्कर्ष पर होंगे। उनका अटूट विश्वास है कि आज की बढ़ती हुई पीढ़ी देश को उन्नति के शिखर तक ले जायेगी। जब भी उन्हें अवसर मिलता है, वे उन्हें 'स्वप्न देखने' के लिए प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें पूर्ण विश्वास है कि अपने सपनों को वे वास्तविकता में बदल देंगे।

इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उन्होंने गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर एक सौ बच्चों को यह प्रतिज्ञा करने के लिए आमंत्रित किया कि ''मैं अपने देश और देशवासियों की सफलता पर उत्सव मनाने में गौरव का अनुभव करता हूँ।'' निश्चय ही, अगले १५ वर्षों में भारत के लाखों बच्चों में इसकी प्रतिध्वनि गूंजेगी।

राष्ट्रपति का 'उत्सव' शब्द के चुनाव का बड़ा महत्व है। उत्सव हमेशा उपलब्धि का अनुगमन करता है। हमारे देश की उपलब्धियाँ पहले से ही इसकी परम्परा में अभिलेखित हैं। प्रायः कहा जाता है कि अतीत भविष्य की आधारशिला है। भारत में ऐसे स्थलों और स्मारकों की भरमार है जो 'अद्भुत भारत' के अतीत की कथा सुनाते हैं। और एक-एक करके उन्हें परम्परा स्थल के रूप में उन्नत किया जा रहा है।

अपनी छुट्टियों को उत्सव के रूप में मनाने के लिए इससे अधिक उपयोगी तरीका और क्या हो सकता है कि कम से कम अपने देश के पुरातन अतीत को जानने के लिए हम इन स्मारकों का पर्यटन करें।

वस्तुतः ये, ढेर सारे ज्ञान अर्जन करने के लिए अध्ययन की कक्षाएं बन सकते हैं।

इन स्मारकों का पर्यटन करते समय बच्चे अनुभव करेंगे कि ''पत्थर भी कथा सुनाते हैं।''

सम्पादक : *विश्वम*

GET YOUR COPY AT YOUR DOORSTEP FOR ONE YEAR FOR JUST RS. 120/-

A TREASURE-TROVE FOR TALENTED TOTS

THE ONE-STOP COMPLETE FUN AND ACTIVITY MAGAZINE.
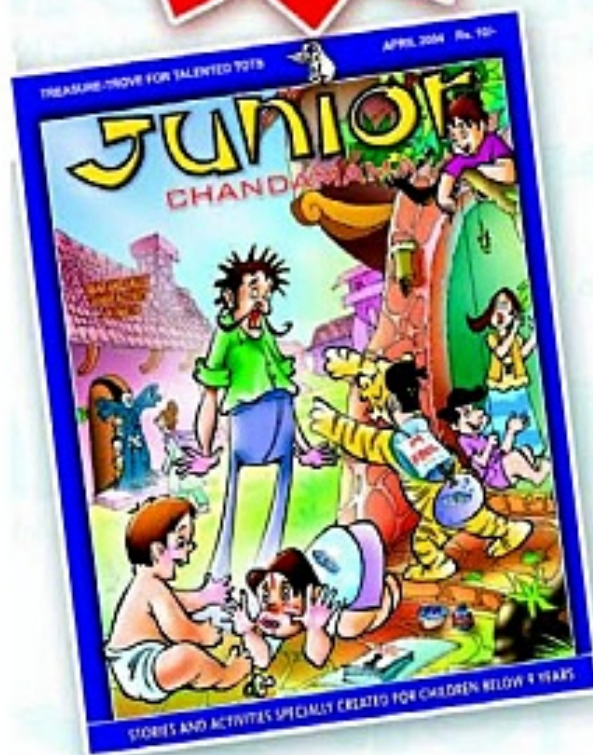
- Games, puzzles, riddles, stories, colouring activity and more...

- Good habits grow when young. Check out articles and features in which values are taught subtly and let your child learn about Indian culture and heritage.

PAGE AFTER PAGE WILL KINDLE YOUR CHILD'S IMAGINATION

Mail the form below along with the remittance to : Subscription division, Chandamama India Limited, 82 Defence Officers' Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.

SUBSCRIPTION FORM

Please enrol me as a subscriber of Junior Chandamama.

I give below the required particulars:

Name : .... Address : ....

....

....PIN Code : ....

I am remitting the amount of Rs.120/- for 12 issues by Money Order/Demand Draft/ Cheque No..................... on...................................... Bank .... branch drawn in favour of Chandamama India Ltd., encashable at Chennai (outstation cheque to include Rs.25/- towards Bank Commission).

Place : ....

Date : ....

Signature

गरीबी का एहसास

सुख-सुविधा में जन्मे और पले व्यक्ति के लिए दीन-दुखियों की पीड़ा को समझ पाना कठिन होता है । किसी दरिद्र को देख कर हम क्या करते हैं? उसकी ओर से आँखें बन्द कर लेते हैं और आगे बढ़ जाते हैं, शायद । लेकिन एक समय एक ऐसा बालक था जिसने जान बूझ कर हर तरह से उन्हीं की तरह रहने के लिए अपने गरीब मित्रों की जिन्दगी अपनाई । इसमें आश्चर्य नहीं कि बाद के वर्षों में वह एक महान मानवतावादी के रूप में प्रसिद्ध हुआ ।

वह एक जर्मन गाँव के पादरी का बेटा अलबर्ट था । अधिकतर वह अपने सबसे अच्छे मित्र जॉर्ज नित्शेम के साथ देखा जाता ।

एक शाम को जब वे स्कूल से लौट रहे थे, जॉर्ज ने अलबर्ट को कुश्ती के लिए ललकारा और अलबर्ट ने उसे स्वीकार कर लिया । अलबर्ट जीत गया और विजय की खुशी के साथ उसने पूछा, ''अब क्या कहते हो?''

''तुम जीत गये!'' जॉर्ज हाँफता हुआ बोला । ''लेकिन यदि हफ्ते में दो बार रात में वैसा शोरबा मिल जाता जैसा तुम खाते हो तो मैं निश्चित रूप से तुम्हें पछाड़ देता ।''

अलबर्ट उठा और चुपचाप अपना बस्ता लेकर घर चलता बना । जॉर्ज खड़ा उसे ताकता रहा । उस शाम को रात के खाने में शोरबा बना था । परिवार को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि अलबर्ट ने, जिसकी भूख पेटू की तरह थी, उस रात शोरबा को छुआ तक नहीं । उसके मित्र के शब्द उसके कानों में गूंजते रहे । अपने कमरे में जाकर उसने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया - अब से वह अपने से गरीब मित्रों के समान ही जीवन-यापन करेगा!

तब से वह अपने संकल्प पर निश्चयपूर्वक डटा रहा । सर्दियों में ओवरकोट न पहन कर अन्य बालकों की तरह वह मामूली ऊनी वस्त्र पहनने लगा । अपने माता-पिता की दलीलों, और डाँट-डपट की उसने परवाह नहीं की । वह बालक कोई और नहीं बल्कि डॉ. अलबर्ट श्वेट्ज़ थे जिन्होंने जरूरतमन्दों की सेवा करने के अपने सपने को साकार करने के लिए संगीत की शानदार जिन्दगी ठुकरा दी । उन्हें सन् १९५२ में नोबेल शान्ति पुरस्कार से विभूषित किया गया ।

प्रेमनाथ का चाँटा

प्रेमनाथ ग़रीब था, फिर भी प्रतिफल की आशा किये बिना सबकी मदद करता था । वह दिन भर कड़ी मेहनत करता था, फिर भी ज़रूरत पर किसी की मदद करने से हिचकिचाता न था।

प्रेमनाथ की मासूमियत को देखते हुए उस गांव का पुरोहित उसे समय-समय पर सलाह देता रहता था, ''देखो, मांगे बिना माँ भी खाने को कुछ नहीं देती। जब दूसरों की मदद करते हो, तब उनसे प्रतिफल भी मांगो।''

''प्रतिफल मांगू तो वह सहायता कैसे कहलायेगी। सिर्फ़ मेहनत के लिए प्रतिफल लेता हूँ, सहायता के लिए कुछ नहीं लेता। उम्मीद है कि जो लोग मुझसे सहायता लेते हैं, वे उसे याद रखेंगे और ज़रूरत पड़ने पर, मेरी मदद करेंगे,'' प्रेमनाथ कहा कहता था।

उस गांव में रंगनाथ नामक एक कंजूस धनवान था। उसे प्रेमनाथ की उदारताके बारे में मालूम हुआ। उसने सोचा, क्यों न उससे काम निकालें, क्योंकि वह प्रतिफल की मांग नहीं करता। फिर वह उससे कोई न कोई काम करवाने लगा।

रंगनाथ की माँ बीमार थी। हर दिन वैद्य को उसकी हालत का खुलासा देना और दवा लानी पड़ती थी। रंगनाथ ने प्रेमनाथ को यह काम सौंपा।

रंगनाथ के नाना प्रकार के व्यापार थे। विविध बस्तुओं का मूल्य जानने के लिए उस गांव में हर सप्ताह होनेवाली हाट में जाना पड़ता था । प्रेमनाथ से वह यह काम भी कराने लगा। इतना ही नहीं, किसी को कोई ख़बर भिजवाने के लिए भी उसी की सहायता लेने लगा।

हाल ही में प्रेमनाथ की बेटी की शादी तय हुई। यह शादी करवाने के लिए उसके पास पर्याप्त रक़म नहीं थी। उसने चार पांच लोगों सेसहायता मांगी। पर कोई भी सहायता करने आगे नहीं

रघुनाथ मिश्रा

आया। इन परिस्थितियों में पुरोहित ने उसे सलाह दी। "तुम्हारी मदद करने की शक्ति केवल रंगनाथ में है। वह तो हर दिन कोई न कोई काम तुमसे करवा रहा है। जाओ उससे मदद मांगो।"

प्रेमनाथ उसी दिन शाम को रंगनाथ के पास गया और कहा, "प्रणाम मालिक। आपसे मदद मांगने आया हूँ।"

उस समय रंगनाथ खाताबही देखने में व्यस्त था। जैसे ही उसने 'मदद' शब्द सुना, उसने आश्चर्यपूर्वक कहा, "मदद! कौन हो तुम?"

"आप यह क्या कह रहे हैं, मालिक? आप तो हर रोज़ मुझे कोई न कोई काम सौंप रहे हैं!" उसने कामों के विवरण भी दिये।

"मुझे तो कुछ भी याद नहीं। हर रोज़ मैं कितने ही लोगों को काम सौंपता हूँ। किसे याद रखूँ? तुम तो कह रहे थे कि मेरी माँ के लिए दवा लाया करते थे। देखें तो सही, वह तुम्हें पहचानती है या नहीं?"

यों कहकर रंगनाथ उसे अपनी माँ के पास ले गया। उसने प्रेमनाथ को नख से शिख तक देखा और कहा, "लगता है, इसे मैंने कभी देखा है। उस दिन तो यह कह रहा था कि दवाएँ लाना उसके लिए असंभव काम है। दवाओं के न होने के कारण उस दिन मुझे कितना परेशान होना पड़ा। मैंने इसे खूब गलियाँ भी दीं।"

इस घटना ने प्रेमनाथ को झकझोर दिया। दुखी होकर जब वह घर लौटने लगा तब रास्ते में पुरोहित से उसकी मुलाक़ात हुई। उसके फीके चेहरे को देखकर पुरोहित ने उससे पूछा, "क्या बात है? क्या हुआ?"

प्रेमनाथ ने पुरोहित को सब कुछ बता दिया।

तब पुरोहित ने खूब सोचने के बाद कहा, "रंगनाथ समझता है कि तुम्हें सिर्फ़ काम करना आता है। तुम्हें कायर समझता है। बहुत बार तुमने उसकी पत्नी की भी तो मदद की। अब उसके पास जाओ। अगर उसने भी तुम्हें पहचानने से इनकार कर दिया तो दिखा दो कि तुममें साहस भरा हुआ है, और तुम कुछ भी कर सकते हो। यह कैसे दिखाओगे, तुम पर निर्भर है।" यों कहकर पुरोहित चला गया।

पुरोहित की बातों से उसमें धैर्य और साहस आ गया। वह सीधे रंगनाथ के घर गया। उस समय वह बरामदे में अपनी पत्नी से बातें कर रहा

था। प्रेमनाथ ने ऊँची आवाज़ में कहा, "मालिक, मैंने कई बार आपकी श्रीमती की भी मदद की। इन्हीं से पूछ लीजिये।"

रंगनाथ ने आँखें लाल करते हुए एक बार प्रेमनाथ की ओर देखा और फिर पत्नी की ओर मुड़कर पूछा, "तुमने इसे क्या कभी देखा? यह तो दावा करता है कि इसने तुम्हारी मदद की।"

"लगता है, देखा है । एक बार केले के पत्ते काटने का काम सौंपा तो दस पत्ते ही काटे और कोई बहाना बनाकर चला गया। यह तो अव्वल दर्जे का सुस्त है। रंगनाथ की पत्नी ने कहा।

प्रेमनाथ ने तब कड़ुवे स्वर में कहा, "देखिये, मैं मेहनत कर के खाता हूँ। जब-जब मौक़ा मिलता है, दूसरों की मदद प्रतिफल की आशा किये बिना करता हूँ।मैंने समय-समय पर आपकी भी मदद की। परंतु दुख की बात यह है कि आपके परिवार के सब लोग मेरी मदद भूल गये।"

इसपर रंगनाथ ने ठठाकर हँसते हुए कहा, "संपन्नों की मदद करने में गौरव है। इसीलिए कई लोग मुझ जैसे धनाढ्य की मदद करने आते हैं। अगर तुम चाहते हो कि हम कुछ तुम्हें याद रखें तो तुम्हें कोई न कोई बड़ा काम करना होगा।"

"मैंने कभी नहीं चाहा कि जो मदद मैंने की,उसकी सराहना कोई करे। पर मेरे न करने पर बहुतों ने मुझे गालियाँ दीं। इसी का मुझे खेद है," प्रेमनाथ ने कहा।

"इसीलिए कहते हैं कि थोड़ा-सा नमक डालने से घड़े भर का दूध फट जाता है। तुम्हारे विषय में भी यही हुआ है।" रंगनाथ ने कहा।

"मालिक, जो हुआ, सो हो गया। मुझे अब मेरी बेटी की शादी के लिए कुछ रुपयों की ज़रूरत है। मेरी सहायता करके मुझे बचा लीजिये। जन्म-जन्मांतरों तक आपकी यह सहायता नहीं भूलूँगा।" प्रेमनाथ ने बड़े ही दीन स्वर में कहा।

रंगनाथ ने चिढ़ते हुए कहा, "अवश्य ही मैं सहायता करता, पर तुम्हें जब जानता ही नहीं हूँ तब क्यों तुम्हारी सहायता करूँ?"

उसके इस जवाब से तंग आकर प्रेमनाथ ने रंगनाथ के गाल पर ज़ोर सेएक चाँटा मारा। स्तब्ध होकर रंगनाथ उसे देखता रहा और प्रेमनाथ वहाँ से चलता बना।

रंगनाथ का अपमान करने का साहस उस दिन तक किसी ने नहीं किया था। वह क्रोधित

हो उठा और सीधे ग्रामाधिकारी से मिलने गया। प्रेमनाथ की शिकायत करते हुए उसने कहा, ''उस घमंडी ने चाँटा मारा। उसे सज़ा नहीं दी गयी तो गाँव में उच्छृंखलता और अराजकता फैल जायेगी।''

ग्रामाधिकारी ने फ़ौरन प्रेमनाथ को बुलवाया।

पर प्रेमनाथ के बदले पुरोहित वहाँ आया और कहने लगा, ''बेचारा प्रेमनाथ अपनी बेटी की शादी को लेकर बहुत चिंतित है। तिसपर उसे आज तेज़ बुखार है। पलंग से उतरना भी उसके लिए संभव नहीं हो पा रहा है। जो हुआ, उसके बारे में आपसे निवेदन करने के लिए मुझे भेजा।''

''उसका क्या कहना है?'' ग्रामाधिकारी ने पूछा।

''उसने कहा कि रंगनाथ की स्मरणशक्ति बहुत कमज़ोर है। कुछ लोग उनकी मदद करते रहते हैं, तो कुछ लोग उनपर हाथ चलाते हैं। पर इनमें से किसी को भी वे याद नहीं रखते।'' पुरोहित ने रंगनाथ का कहा सुनाया।

रंगनाथ क्रोध भरे स्वर में चिल्लाने लगा, ''उसका नाम प्रेमनाथ है। उसकी बेटी की शादी पक्की हो गयी। धन की सहायता मांगने मेरे पास आया। मैंने धन देने से इनकार क दिया। तो मेरे गाल पर उसने चाँटा मारा।''

''प्रेमनाथ ने प्रतिफल मांगे बिना इनकी और इनके परिवार की सेवाएँ कीं। फिर भी इन्हें उसकी याद नहीं आयी, उसे पहचानने से इनकार कर दिया। इन्होंने कहा था कि वह कोई बड़ा काम कर दिखाये, तभी ये उसे पहचान पायेंगे। उसने जो चाँटा मारा, उसकी याद इन्हें अच्छी तरह से है। इसका यह मतलब हुआ कि उसने आज बड़ा काम कर दिखाया। जो बड़ा काम करते हैं, उनकी प्रशंसा होनी चाहिये, न कि उनसे कैफ़ियत तलब हो,'' ग्रामाधिकारी को पुरोहित ने कहा।

अब पूरा विषय ग्रामाधिकारी की समझ में आ गया। पर वह पुरोहित की बातों का खुले आम समर्थन करने की हालत में नहीं था। उसने कहा, ''बातों को घुमा-फिराकर कहने मात्र से गलती टल नहीं सकती। ग़लती ग़लती ही होती है. प्रेमनाथ को सज़ा देनी ही पड़ेगी।''

''ग्रामाधिकारी, प्रेमनाथ ने रंगनाथ की कितनी ही सेवाएँ कीं। कोई प्रतिफल नहीं लिया। उसकी सेवाओं के लिए जो प्रतिफल दिला सके, वही

उसकी ग़लती की सज़ा दे सकता है। यह मेरा व्यक्तिगत अभिप्राय है,'' पुरोहित ने कहा।

ग्रामाधिकारी उसकी बातें सुनकर सकपकाता हुआ बोला, ''प्रेमनाथ के बारे में मैं बखूबी जानता हूँ। वह गाँव में बहुत से लोगों की सहायता करता रहता है। मैं भी उनमें से एक हूँ। कई बार उसने मेरी भी मदद की। उससे जो ग़लती हुई है, उसके लिए उसे दण्ड देना हो तो उसके पहले उससे की गयी मदद के लिए उसे प्रतिफल देना होगा। जिस-जिस को उसने मदद पहुँचायी, उनसे उसका प्रतिफल दिलाना मेरी जिम्मेदारी है। भले ही गाँव के सब लोगों को और मुझे भी चाँटा क्यों न मारे, उसे सज़ा देने का हक़ मुझे नहीं है।''

ग्रामाधिकारी का यह फैसला सभी ग्रामीणों को चाँटा-सा लगा। सबने आपस में बात कर ली और प्रेमनाथ की बेटी की शादी के लिए मदद पहुँचाने का निश्चय लिया।

ग्रामाधिकारी ने पुरोहित से कहा, ''मालूम नहीं, ये बातें तुम्हारी हैं या प्रेमनाथ की, पर इन बातों में सच्चाई है। प्रेमनाथ खुद भी आ जाता तब भी शायद ऐसा नहीं हुआ होता। समय पर आकर तुमने समस्या का सही परिष्कार किया और पूरे गाँव का भला किया। तुम सच्चे अर्थों में पुरोहित हो।''

वहाँ जमा कुछ लोग जान-बूझकर ऊँची आवाज़ में बातें करने लगे, क्योंकि वे चाहते थे कि ये बातें रंगनाथ ज़रूर सुने। वे आपस में कहने लगे,'' गाँव में हम इतने लोग हैं। हममें से बहुतों से उसने मदद नहीं मांगी और मांगी भी तो उस मक्खीचूस रंगनाथ से।''

उनकी ये बातें सुनकर रंगनाथ की आँखें खुल गयीं। उसे अपनी ग़लती का एहसास हुआ। वह अपने आप ही कहने लगा, ''प्रेमनाथ ने चाँटा मारा, मुझे नहीं बल्कि मेरे असीम स्वार्थ को, मेरे अहंकार को। इसके लिए जो सज़ा सुनायी गयी, वह सही भी है। भविष्य में हर सहायता के लिए प्रतिफल देना मेरा कर्तव्य होगा और प्रेमनाथ जैसे अच्छे लोगों को किसी भी हालत में दूर नहीं रखूँगा। अपनी ग़लतियों को सुधारूँगा और ग्रामीणों का प्रेम पात्र बनूँगा।''
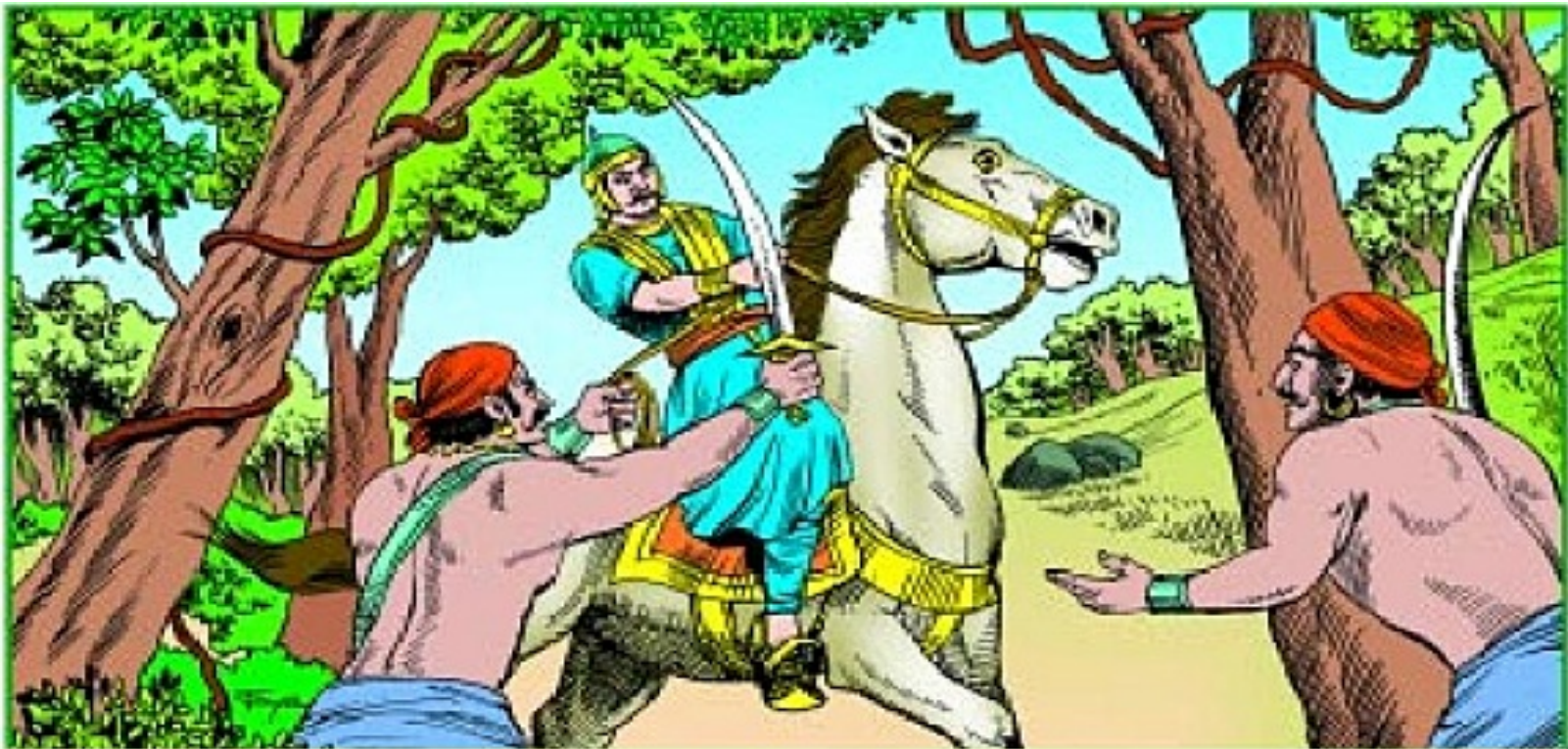
भल्लूक मांत्रिक

6

(चन्द्रशिला नगर पर हमला करने गये हुए राजा दुर्मुख पर भल्लूक मांत्रिक ने वधिक भल्लूक को उकसाया। इसे देख दुर्मुख अपने एक अंग रक्षक के साथ घोड़े पर सवार हो जंगल में भाग खड़ा हुआ, तब नागमल्ल नामक एक लुटेरे दल के नेता ने उसे फंदे में फंसाकर डालों पर खींचा। इसके बाद...)

दो डाकू जब भयंकर रूप से चिल्लाते पेड़ों की डालों में से राजा दुर्मुख के घोड़े के आगे कूद पड़े, तब राजा दुर्मुख के अंग रक्षक ने घोड़े की लगाम को कसकर खींचते हुए कांपकर कहा- ''महाशयो, मेरी कमर में तलवार ज़रूर लटक रही है, मगर मैं इस वक़्त असहाय हूँ, मेरे द्वारा आप लोगों की कोई हानि न होगी।''

डाकुओं का नेता नागमल्ल अपने बायें हाथ से घोड़े की लगाम पकड़कर दायें हाथ की तलवार को अंग रक्षक के कंठ की ओर बढ़ाते हुए बोला- ''अबे, तुम सचमुच तलवार खींच देते, तब भी हम डरनेवाले नहीं हैं। लो, तुम्हारे आगे जानेवाला घुड़ सवार पेड़ों की डालों में लटक रहा है। तुम दोनों के साथ क्या कुछ और लोग इधर चले आ रहे हैं?''

अंग रक्षक सोच रहा था कि इसका क्या उत्तर दे। अगर यह कह दे कि उनके थोड़े अनुचर पीछे चले आ रहे हैं, तब क्या यह खतरा टल जाएगा? या अपने दोनों के बारे में ही बता दे तो ख़तरा कम होगा? तभी राजा दुर्मुख पेड़ की डाल से

लटकते हुए चिल्ला उठा- ''अरे अंग रक्षक! तुम कहाँ हो?''

तभी नागमल्ल तलवार चमकाते धमकी भरे स्वर में बोला-''तुम अंग रक्षक हो? किस प्रकार के अंग रक्षक हो? तुम्हारा राजा कौन है? पर इससे पहले तुम घोड़े से उतर जाओ।''

अंग रक्षक घोड़े से उतर पड़ा। तब राजा को डालों से छुड़ाने में परेशान होनेवाले डाकू से नागमल्ल बोला- ''अरे, हमारे हाथ आज बड़े पैसेवाले लगे हैं। हमारी पाँचों उंगलियाँ घी में हैं। उस आदमी को सावधानी से उतारो, जिससे उसकी कमर टूट न जाये !''

डालों पर से डाकू ने दुर्मुख को धीरे से जमीन पर उतार दिया। तब दुर्मुख अपनी कमर में कसे रस्से को खोलने को हुआ। इस पर नागमल्ल के पास खड़े एक और डाकू ने दुर्मुख के समीप जाकर कठोर स्वर में कहा-''क्या तुम कमर में कसे रस्से को अपने कंठ में कसना चाहते हो?''

इस बीच पेड़ पर से उतरकर डाकू और नागमल्ल भी आ पहुँचे। नागमल्ल ने राजा को एक बार एड़ी से चोटी तक परखकर कहा- ''तुम्हारी क़ीमती पोशाकें और नक़्क़ाशी की गई तलवार के म्यान को देखने से लगता है कि तुम खूब पैसेवाले हो! अभी तुम कुछ गड़बड़ किये बिना अपने सारे पैसे चुपचाप वहाँ रख दो, फिर तुम अपने अंग रक्षक को घर भेजकर दस हज़ार सिक्के और मँगवा दो। वरना तुम्हारी लाश सामनेवाली पहाड़ी गुफाओं के किसी बाघ का आहार बन जाएगी।''

ये बातें सुन राजा दुर्मुख सोचने लगा- ''यदि वह अपने को अमुक देश का राजा बतला दे तो डाकुओं का नेता उसी वक़्त उसका सर काटकर पुरस्कार पाने के वास्ते उसे चन्द्रशिला नगर के राजा जितकेतु के पास ले जाकर उसे सौंप सकता है। यदि अपने को कोई संपन्न व्यापारी बतलाकर झूठ कहे तो अपने अंग रक्षक के द्वारा दस हज़ार सिक्के घर से मंगाने पड़ेंगे। इस बीच अगर उसके झूठ बोलने की बात खुल जायेगी तो...''

तब डाकुओं का नेता क्रोध में आकर दांत भींचते तलवार खींचकर बोला-''तुम सोच क्या रहे हो? क्या कोई युक्ति करके यहाँ से भागने की योजना तो नही बना रहे हो?''

उत्तर में दुर्मुख ने कहा- ''मैं सोच रहा हूँ कि दस हज़ार सिक्के कैसे मँगवा दूँ? मेरा नाम दुर्जय

गुप्त है, मैं उदयगिरि का निवासी हूँ। मगर इस वक़्त मेरे हाथ में कौड़ी भी नहीं है।''

यह जवाब सुनकर नागमल्ल बिस्मय से बोला- ''ओह ऐसी कीमती पोशाकें पहनकर अंग रक्षक को भी साथ रखकर इस जंगल में बिना एक कौडी हाथ में लिये यात्रा कर रहे हो? क्या तुम्हारी ये बातें यक़ीन करने लायक़ हैं?'' फिर अपने अनुचरों की ओर मुड़कर बोला - ''सुनो, इसकी कमर के रस्सों को खोल कंठ से कस दो, इस बीच मैं ढूँढ़ लेता हूँ कि इसे फाँसी पर चढ़ाने के लिए कौन सी डाल मज़बूत होगी?''

नागमल्ल की बात पूरी न हो पाई थी कि कहीं दूर पर हाथी के चिंघाड़ के साथ भल्लूक की चिल्लाहट सुनाई दी। राजा दुर्मुख और उसका अंग रक्षक उसे सुनकर आपाद मस्तक कांप उठे। अंग रक्षक ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाकर कहा- ''महाराज, मैंने सोचा था कि बधिक भल्लूक जंगल में रास्ता भटक गया है। लेकिन मालूम होता है कि वह हमारे निशानों को देख इसी ओर आ रहा है।''

डाकुओं का नेता बिस्मय में आ गया। उसने अपने अनुचरों की ओर आश्चर्यभरी दृष्टि दौड़ाकर कहा- ''तुम लोगों ने इनकी बातें सुन ली हैं? यह तो अपना नाम दुर्जय गुप्त बता रहा है और दूसरा तो इसे महाराजा पुकारता है? सब से बड़ी बिचित्र बात तो है बधिक भल्लूक... उसका इस जंगल में रास्ता भटक जाना!'' यों कहकर नागमल्ल ने तलवार उठाकर पूछा-''अबे, सच सच बताओ, तुम दोनों बावरे हो या बेतुकी बातें करके हम को बुद्धू बनाना चाहते हो?''

राजा दुर्मुख घबरा गया। वह सोच ही रहा था कि इस बार कौन सा उत्तर दे, तभी अति निकट से हाथी का चिंघाड़ और बधिक भल्लूक की चिल्लाहटें सुनाई दीं। इस पर नागमल्ल भी घबरा गया।

अपने अनुचर से बोला- 'अरे सुनो, तुम पेड़ पर चढ़कर देख लो! एक ही साथ हाथी का चिंघाड़ और भालू की कंठ ध्वनि जैसी मनुष्य की यह चिल्लाहट कैसी?''

डाकुओं में से एक जल्दी-जल्दी पास के एक पेड़ पर चढ़ गया। दूसरे ही क्षण चीख उठा- ''मल्लू, उस दुर्जय गुप्त और उसके नौकर का कहना बिलकुल सच है। सूड कटी एक हाथी और उस पर परशु धारण किया हुआ भल्लूक-अरे रे,
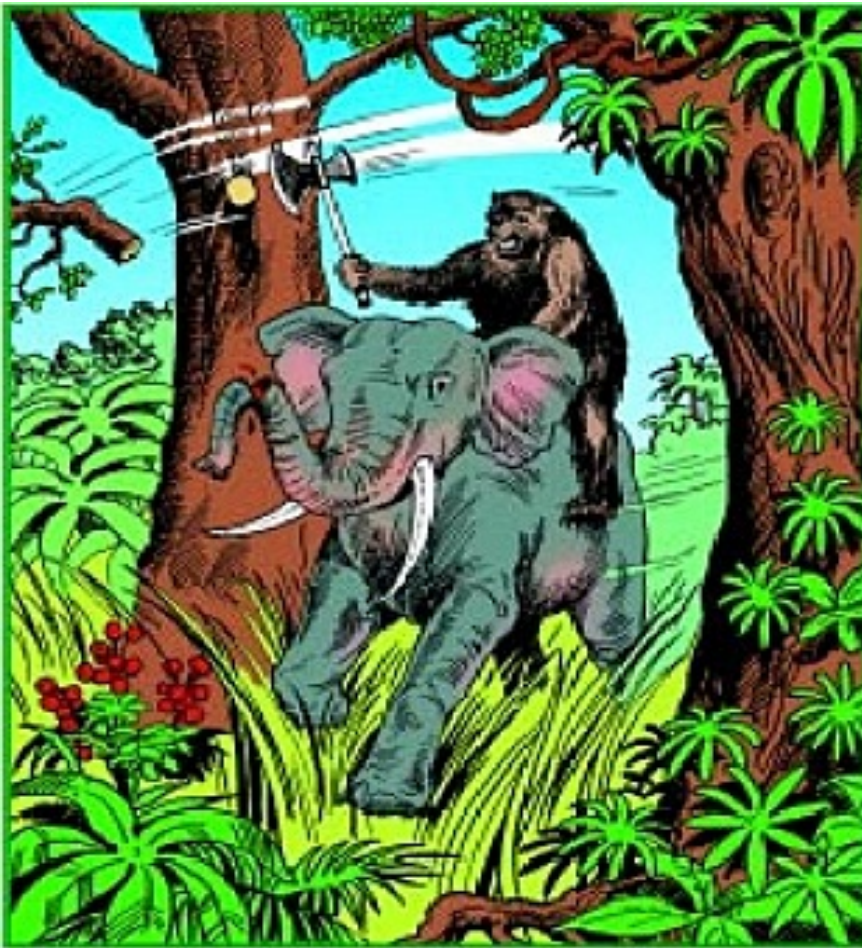
उस परशु के वार से पेड़ों की डालें तिनकों के समान कटकर तितर-बितर हो रही हैं।''

नागमल्ल ये बातें सुन सोचने लगा कि अब क्या किया जाय, तभी राजा दुर्मुख उसका हाथ पकड़कर बोला- ''मल्ल, हमें जल्दी यहाँ से भाग जाना उचित होगा! धन के लोभ में पड़कर तुम हमारे प्राणों की बलि मत दो। तुम चाहो तो मैं अपने धन से तुम्हारे वास्ते एक राज्य भी ख़रीदकर दे सकता हूँ।''

अंग रक्षक ने घोड़े पर सवार हो भागने की युक्ति की। लगाम थामकर नागमल्ल से बोला- ''नागमल्ल! इस बक़्त अगर तुम महाराजा के प्राणों की रक्षा करोगे तो वे तुम्हें अपना आधा राज्य दान कर देंगे। मैं घोड़े पर सवार हो राजधानी में जाकर सेना को साथ ले लौट आऊँगा।''

''यह काम तो मैं खुद कर सकता हूँ। मगर इस घने जंगल में राजधानी का रास्ता मालूम नहीं हो रहा है न?'' ये शब्द कहते राजा दुर्मुख ने घोड़े की लगाम थाम ली।

नागमल्ल ने अपने दो अनुचरों को आँख का इशारा किया, तब दुर्मुख और अंग रक्षक की ओर लाल लाल आँखों से देख बोला- ''अबे, तुम दोनों क्या बुद्धू हो या दगा देने में प्रवीण हो? इधर वह बधिक भल्लूक हमला करने जा रहा है और तुम लोग कहीं दूर स्थित राजधानी में जाकर सेना को ले आना चाहते हो?''

फिर अपने अनुचरों की ओर मुखातिब हो बोला- ''अबे, इन दोनों को रस्सों से बांधकर उन पहाड़ी गुफाओं की ओर खींच ले जाओ। उस बधिक भल्लूक के यहाँ से निकल जाने के बाद इन लोगों का सही पता लगायेंगे।''

नागमल्ल यों आदेश देकर गुफाओं की ओर चल पड़ा। तब उसके अनुचर राजा दुर्मुख और अंग रक्षक को रस्सों से बांधकर उसके पीछे खींचते ले जाने लगे।

तभी बधिक भल्लूक पेड़ों की ओट में से दुर्मुख को देख गरज उठा- ''अरे दुष्ट! तुम मेरे हाथों में पड़ गये। मैं अपने परशु को तुम्हारी बलि देने जा रहा हूँ।'' यों कहते हाथी पर से कूदकर वह उनका पीछा करने लगा।

नागमल्ल और अन्य सभी भय कंपित हो दौड़ते हुए एक गुफा में घुस गये। और उन सब ने मिल कर गुफा के मुहाने पर एक बड़ी चट्टान रख दी।

बधिक भल्लूक गुफा के सामने जाकर एक-

दो बार जोर से चट्टान पर लात मारते हुए चिल्ला उठा- "अबे, गुफा के अन्दर रहनेवालो, तुम सब बाहर आ जाओ! मुझे सिर्फ़ दुर्मुख का सर चाहिए बाक़ी लोगों की मैं जरा भी हानि नहीं करूँगा।"

यह चिल्लाहट सुनकर नागमल्ल अपने अनुचरों से बोला- "वाह, यह तो, खूब रहा! वह पिशाच भालू राजा दुर्मुख का सिर चाहता है। यह गड़बड़ झाला क्या है?"

फिर दुर्मुख से बोला,-इस प्रदेश के समीप मे स्थित उदयगिरि राज्य पर दुर्मुख नामक राजा शासन करते हैं। मैं जंगलों को छोड विचित्र दृश्य देखने के लिए नगरों में जानेवाला व्यक्ति नहीं हूँ मैंने उस राजा को आज तक कभी नहीं देखा है। कहीं आप ही वह दुर्मुख राजा तो नहीं हैं?"

"मैं दुर्जय गुप्त हूँ। उदयगिरि का निवासी हूँ। किसी पिशाच के प्रभाव में आया हुआ उस भालू की बातों पर यक़ीन क्यों करते हो? हम लोगों के यहाँ से जान बचाकर भाग जाने का कोई उपाय सोचो। तुम्हें दस हज़ार सिक्के, मैं दे दूँगा।" दीनतापूर्ण चेहरा बनाकर राजा दुर्मुख ने कहा।

"नागमल्ल! महाराजा ने आज तक बचन-भंग नहीं किया है।" अंग रक्षक ने कहा।

"अरे कमबख्त! चुप रहो। तुम पर कोई पिशाच तो सवार नहीं है? जब से मैं इस जंगल में पहुँचा हूँ, तब से तुम मुझे लगातार 'महाराजा' 'महाराजा' पुकारते हो! मैं सब के सामने तुम्हारा शिरच्छेद करा सकता हूँ।" दुर्मुख ने डाँटा।

डाकू नागमल्ल चौंक पड़ा और अपने दो अनुचरों से बोला- "अरे लगता है, खुशक़िस्मती या बद क़िस्मती से ही सही, हम लोगों ने उदयगिरि के राजा दुर्मुख को पकड़ लिया है। राजा को छोड़ और किसे खुले आम शिरच्छेद कराने का हक़ है? इस दुर्जय गुप्त ने भूल से अपना वास्तविक परिचय दे दिया है।"

राजा दुर्मुख को अब दो प्रकार का डर सताने लगा। एक तो गुफा के बाहर चट्टान को हटाने की कोशिश करनेवाले बधिक भल्लूक का और भीतर के डाकुओं का। उसने कोई संकेत देने के लिए बगल में खड़े अंग रक्षक पर कुहनी चलाकर कहा- "नागमल्ल! तुम मेरे बारे में किसी भ्रम में फंस गये हो। मैं सचमुच दुर्जय गुप्त हूँ। इस भयंकर जंगल में प्रवेश करने के मिनट से लेकर मेरा नौकर पागल सा हो अंट संट बकता जा रहा है। लगता है कि कोई दुष्ट ग्रह इसके शरीर के अंदर प्रवेश कर गया है।"

"महाराजा! क्षमा कर दीजिए! बस, बस,यही बात है!" जोर से कराहते हुए अंग रक्षक ने कहा।

नागमल्ल ने अपना सिर थामे कहा- "इस हालत में तुम चाहे राजा हो या दुर्जय गुप्त! मेरा कुछ भला होनेवाला नहीं है। वह भयंकर भल्लूक गुफा की चट्टान को हटाकर परशु से हम सब के सर काटने जा रहा है।"

फिर अपने अनुचरों से नागमल्ल ने कहा, - "अबे, हमें अगर मरना ही है तो किसी भी तरह से मर जायेंगे। इसलिए हम ही लोग पहले चट्टान को हटाकर उस बधिक भल्लूक पर बार करें तो कैसा होगा?"

डाकू अपने नेता के सवाल का जवाब देने जा रहे थे, तभी अंग रक्षक ने दखल देकर कहा - "नागमल्ल! उस बधिक भल्लूक की सृष्टि भल्लूक मांत्रिक ने की है। उसकी शक्ति राक्षस के बराबर है। इसलिए हमें इस गुफा के अन्दर रहना ही ज़्यादा हितकर होगा।"

उसकी बात पूरी न हो पाई थी कि भल्लूक बधिक अपने दोनों हाथों से चट्टान को थोड़ा अलग खिसकाकर गुफा के भीतर झांको बोला- "अरे राजा दुर्मुख! बाहर आ जाओ! तुम्हारा सर काटकर मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा।"

"ओह! अब मुझे मालूम हो गया। यह भल्लूक राजा दुर्मुख उर्फ़ दुर्जय गुप्त से ही बदला लेना चाहता है। हम लोग बच गये। इसको पकड़कर गुफा के बाहर ढकेल दो।" डाकुओं के नेता ने आदेश दिया।
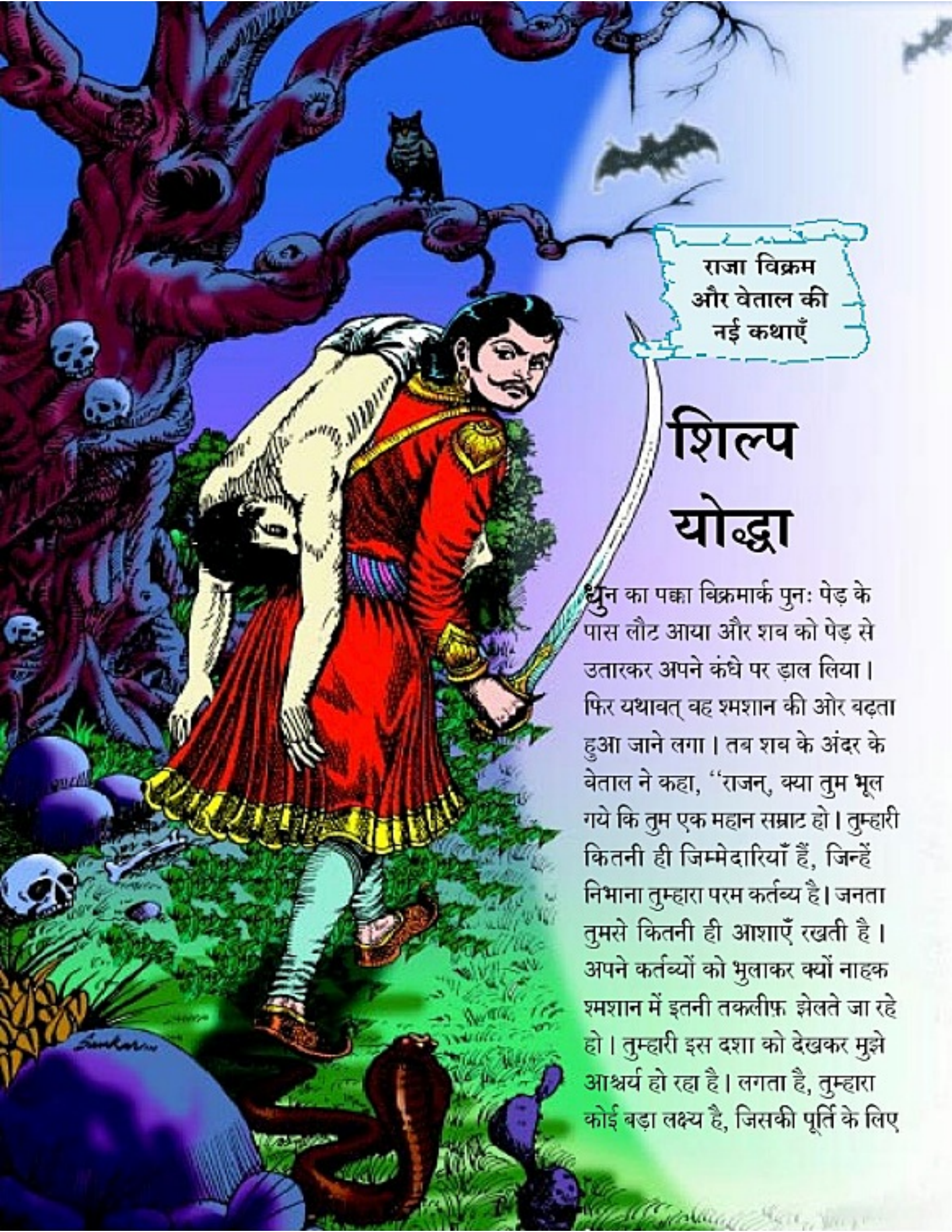
दोनों डाकू राजा दुर्मुख के कंधे पकड़ कर गुफा के बाहर ढकेलने की कोशिश में लगे थे, तभी थोड़ी दूर पर से यह भयंकर कंठ ध्वनि सुनाई दी - "मैं तभी से देखता हूँ, यह कैसा शोरगुल है? क्या तुम लोग यह नहीं जानते कि बगल की गुफा में महा राक्षस उग्रदण्ड निवास करते हैं?"

दूसरे ही क्षण बधिक भल्लूक राक्षस की ओर बढ़ते गरज उठा-"अबे, तुम राक्षस हो? तुम्हारा नाम उग्रदण्ड है? भल्लूक मांत्रिक का मंत्र पूरित यह परशु तुम्हारा कंठ काटने जा रहा है।"

(क्रमशः)

राजा विक्रम और वेताल की नई कथाएँ

शिल्प योद्धा

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास लौट आया और शव को पेड़ से उतारकर अपने कंधे पर ड़ाल लिया। फिर यथावत् वह श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, क्या तुम भूल गये कि तुम एक महान सम्राट हो। तुम्हारी कितनी ही जिम्मेदारियाँ हैं, जिन्हें निभाना तुम्हारा परम कर्तव्य है। जनता तुमसे कितनी ही आशाएँ रखती है। अपने कर्तव्यों को भुलाकर क्यों नाहक श्मशान में इतनी तकलीफ़ झेलते जा रहे हो। तुम्हारी इस दशा को देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है। लगता है, तुम्हारा कोई बड़ा लक्ष्य है, जिसकी पूर्ति के लिए

इतने कष्ट झेल रहे हो। परंतु मुझे डर है कि सफलता मिल जाने पर कहीं उससे हाथ न धो बैठो । बहुत पहले मयूर नामक एक महा शिल्पी ने भी ऐसी ही ग़लती की थी। उसकी कहानी मुझसे सुनो और सावधान हो जाओ।'' फिर बेताल कहानी सुनाने लगा।''

बहुत पहले की बात है। कनकगिरि साम्राज्य के सम्राट के अधीन कितने ही सामंत राज्य थे। कई सामंत राज्यों में से एक था, शोणपुरी। उस राज्य का शासक था, वीरवर्धन। वह चेन्नकेशव-स्वामी का परम भक्त था ।

एक बार वह जंगल में शिकार करने गया । वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य पर वह रीझ गया । हरियाली के बीचों बीच, ऊँचा पहाड तथा उससे लग कर प्रवाहित होती सुवर्ण नदी ने उसे मंत्रमुग्ध कर दिया ।

दोपहर तक आखेट करने के बाद राजा एक वृक्ष के नीचे विश्राम लेने लगा और धीरे-धीरे निद्रा की गोद में चला गया । सपने में उसने राजवंशजों के कुलदैव चेन्नकेशवस्वामी को देखा। देव ने राजा से कहा, ''पर्वत पर मेरा एक मंदिर हुआ करता था। कालक्रम में वह विलीन हो गया । पर्वत की पश्चिमी दिशा में एक अश्वथ वृक्ष है । वहाँ खोदने पर एक मूर्ति दिखायी देगी । वहाँ तुम एक मंदिर का निर्माण करो और उसमें उस मूर्ति को प्रतिष्ठित करो । इससे तुम्हारा और तुम्हारे राज्य का कल्याण होगा । इस मंदिर के निर्माण का भार नगर के समीप के ग्रामवासी मयूर नामक शिल्पी को सौंपो।'' देव ने यों आदेश दिया ।

वीरवर्धन जैसे ही नींद से जागा, उसे सपने की याद आयी। वह बेहद खुश हुआ । नगर में लौटते ही उसने शिल्पी मयूर को ख़बर भिजवायी। उससे पर्वत पर मंदिर के निर्माण की बात बतायी और उससे यह भी कहा कि मंदिर के निर्माण के बाद अश्वथ वृक्ष के नीचे की मूर्ति का प्रतिष्ठापन उसमें हो ।

राजा की आज्ञा के अनुसार मयूर ने मंदिर के निर्माण का कार्य शुरू किया । उस अश्वथ वृक्ष के नीचे वह मूर्ति भी प्राप्त हुई । मंदिर के निर्माण के लिए व्यय का जो अंदाज़ा लगाया गया, उससे बहुत अधिक धन निर्माण - कार्य में खर्च हुआ । खर्च इतना बढ़ गया कि खज़ाना भी खाली हो गया । राजा, सम्राट को कर चुकाने की स्थिति में भी नहीं था ।

वृद्ध सम्राट की आकस्मिक मृत्यु के बाद उसका पुत्र धीरसेन सम्राट बना । वह अव्वल दर्जे का लोभी था । सामंतों से अधिकाधिक कर वसूल करता था । उसने राजा वीरवर्धन पर तुरंत कर चुकाने के लिए दबाव डाला। वीरवर्धन ने अपनी विवशता धीरसेन से बतायी ।

यह जानकर धीरसेन आग-बबूला हो गया और अपनी सेना को शोणपुरी पर आक्रमण करने के लिए भेजा । सेना शोणपुरी की सरहदों पर पहुँची और निर्मित नये मंदिर के पास रुकी । क्रूर सेनापति ने पर्वत पर के मंदिर को देखते हुए अपने सैनिकों को आज्ञा दी, "इसके मूल में है, यह मंदिर । जाओ और उसे गिरा दो ।"

सैनिक पर्वत पर गये और राजगोपुर से होते हुए मंदिर के अंदर गये । शिल्प सौंदर्य से भरपूर द्वारपालकों की मूर्तियों को उन्होंने देखा तो वे देखते रह गये । सैनिक उन शिल्पों का ध्वंस करने ही वाले थे कि एक चमत्कार हो गया । द्वारपालों की आँखों से अश्रुधाराएँ बहने लगीं ।

सैनिक भयभीत हो गये । वे पर्वत से उतरकर नीचे आ गये । यह बात सेनापति के द्वारा, सम्राट को भी मालूम हुई। सम्राट को लगा कि कोई अशुभ होने जा रहा है, इसलिए उसने सेना वापस बुला ली ।

यह जानते ही शोणपुरी की जनता बहुत हर्षित हुई । राजा ने शिल्पी मयूर को बुलवाया और क्रोध-भरे स्वर में उससे कहा, "तुम भी कैसे शिल्पी हो । तुम्हें तो ऐसे शिल्पों का निर्माण करना चाहिये था, जो शत्रुओं का सामना तलवार से करें, न कि आंसू बहानेवाले शिल्पों का निर्माण । युद्ध में शत्रुओं के छक्के छुडानेवाली मूर्तियों का निर्माण करते तो हमें ये दिन देखने न पड़ते !"
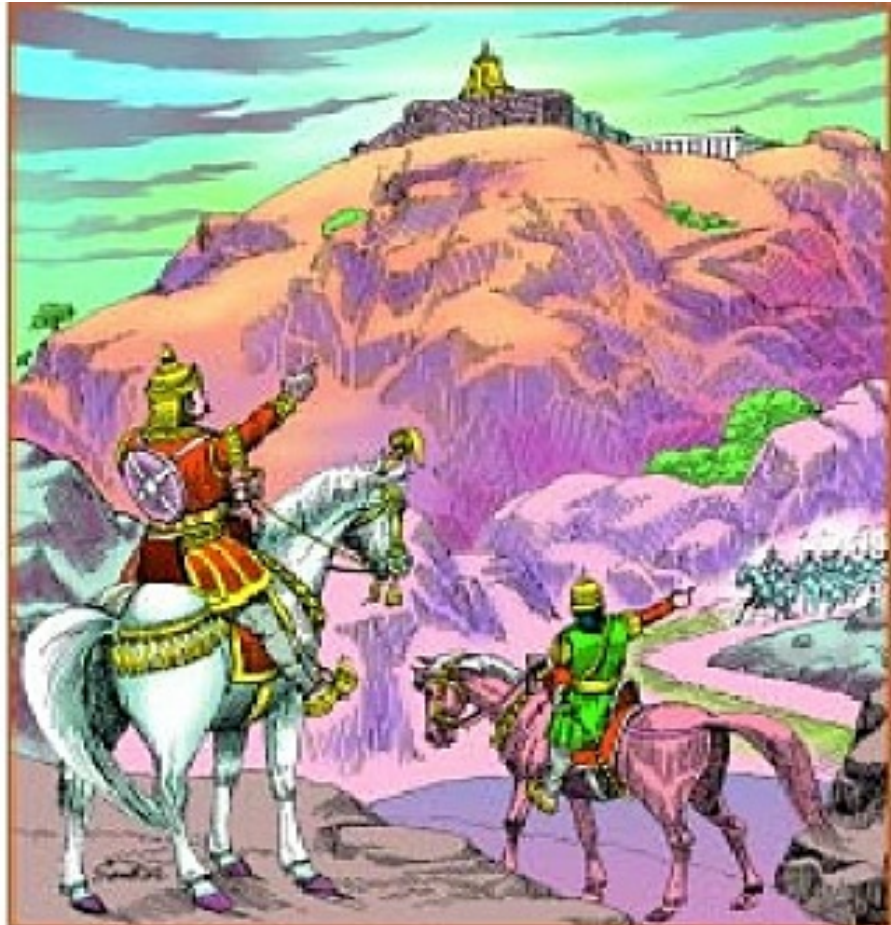
मयूर चुप ही रहा । इसके दूसरे ही दिन पर्वत के नीचे दस हज़ार पांवों के मंडप के निर्माण का काम उसने शुरू कर दिया । हर स्तंभ पर अश्वारूढ़ होकर तलवार हाथ में लिये युद्धक्षेत्र में कूदने को तैयार योद्धा के शिल्प छीले गये । उस मंडप के निर्माण के लिए उसने राजा से प्राप्त अपना पारितोषिक खर्च कर दिया । जब और धन-राशि की ज़रुरत पड़ी, दाताओं से वसूल किया । यों दस हज़ार पांवोंवाला मंडप पूरा हो गया । फिर शिल्पी मयूर, राजा से मिला और कहा, "राजन, भविष्य में हम किसी के दास होकर नहीं रहेंगे।"
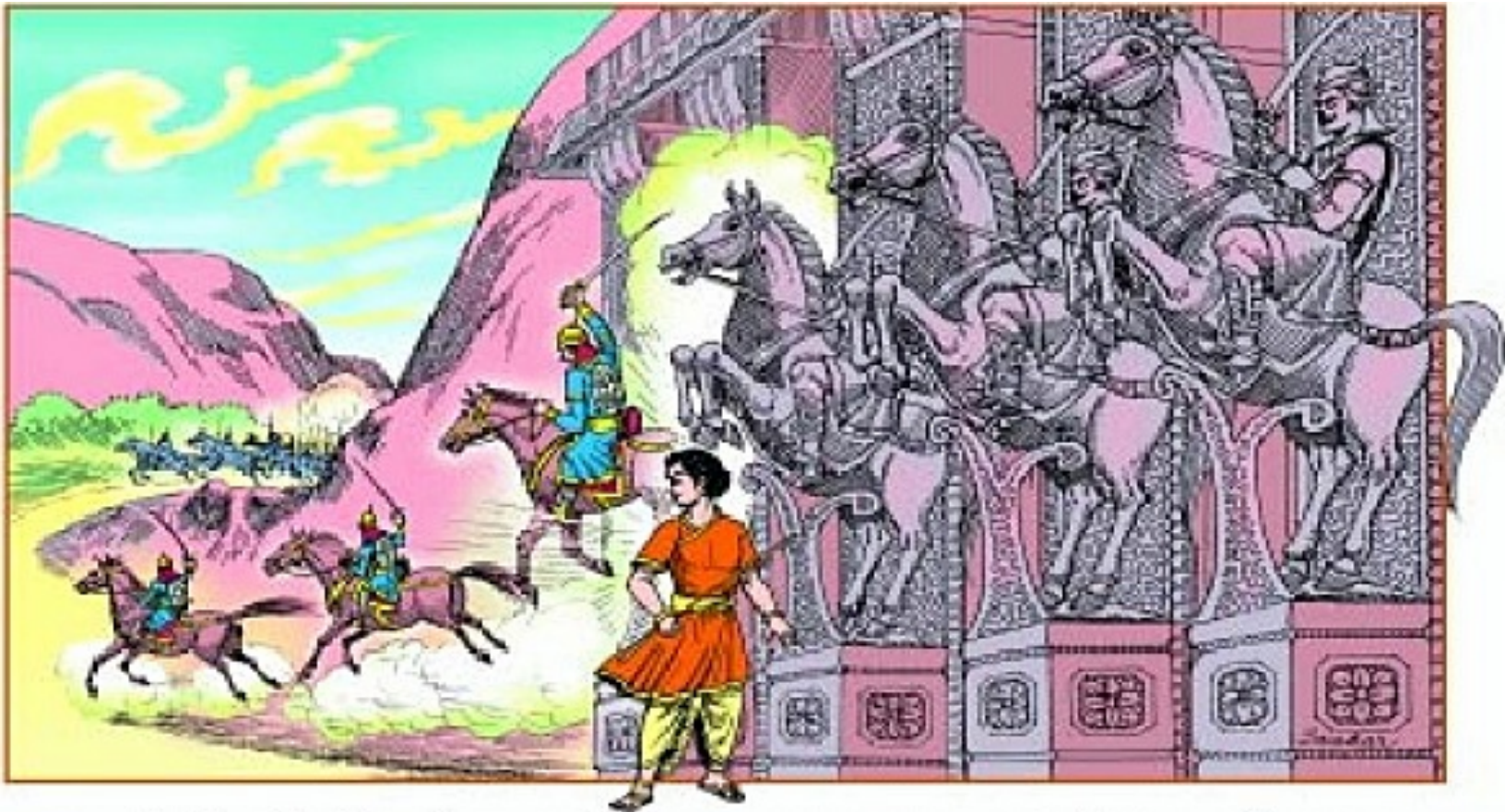
राजा ने शोणपुरी को स्वतंत्र राज्य घोषित किया । सम्राट को यह बात मालूम हुई । उसने फ़ौरन बहुत बडी सेना शोणपुरी पर हमला कर देने के लिए भेजी ।

मयूर बेंत जैसी वस्तु हाथ में लिये दस हज़ार पैरवाले मंडप के पास चला आया ।

एक स्तंभ के शिल्प योद्धा को बेंत से छूकर उसने कहा, ''योद्धा, निकल पड़ो, तलवार चमकाओ, युद्धक्षेत्र में कूद पड़ो । राजा को विजय प्रदान करो ।''

बस, शिल्प योद्धा सजीव होकर एक के पीछे एक युद्धक्षेत्र में कूद पड़े और साधारण सेना में हिलमिल गयें। उनके पराक्रम के सामने शत्रु सेना टिक नहीं पायी। राजा वीरवर्धन विजयी हुए।

वीरवर्धन की खुशी का ठिकाना न रहा । उसने शिल्पी मयूर के सम्मान हेतु सभा का प्रबंध किया, पर वह ग़ायब था । उसे बहुत ढूँढ़ा गया, पर उसका कहीं भी पता नहीं चला ।

बेताल ने इस कहानी को सुनाने के बाद कहा, ''राजन्, मुझे मयूर का व्यवहार बड़ा ही बिचित्र लगता है । वह या तो मूर्ख होगा या अंहकारी । अपनी कला से उसने राजा को विजय दिलायी और चुपचाप ग़ायब हो गया । हो सकता है, राजा की व्यवहार - शैली उसे अच्छी न लगी हो, तो फिर उसने मंडप के निर्माण में अपना पारितोषिक खर्च क्यों किया? उसने राजा की इतनी भलाई की, पर प्रतिफल की आशा किये बिना क्यों ग़ायब हो गया? मेरे संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे ।''

इसके उत्तर में विक्रमार्क ने कहा, ''महाशिल्पी मयूर मूर्ख नहीं हैं, अहंकारी भी नहीं । निस्संदेह

ही वह प्रज्ञावान है । आस्थान में शिल्पी का पद बिना चाहे ही, उसे मिल गया । आंसू बहानेवाले शिल्पों ने उसे प्रसिद्ध किया, पर उसने जान-बूझकर ऐसा नहीं किया । उसकी शिल्प कला व नैपुण्य पर व उसकी समर्पित भावना पर मुग्ध होकर कला की देवी ने उसे यह वर प्रसादा । और यह सच्चाई मयूर को भी भली-भांति मालूम थी।

पर, राजा ने उसके कला-कौशल की भरसक प्रशंसा नहीं की, उसका अभिनंदन नहीं किया । उल्टे उसने इसे अपने स्वार्थ के लिए उपयोग में लाना चाहा । कोई भी कलाकार मन ही मन चाहेगा कि उसकी प्रतिभा की पहचान हो। पर मयूर को ये प्राप्त नहीं हुए । इससे मयूर के कोमल हृदय को धक्का लगा । परंतु उसने अपनी यह पीडा व्यक्त नहीं होने दी और राज्य की प्रजा का उसने कल्याण चाहा । उसने शिल्प योद्धाओं की सृष्टि की और राजा को विजयी बनाया । प्रजा को स्वतंत्र किया। अब रहा, ग़ायब हो जाने का कारण । राजा ने चाहा कि राज्य को स्वतंत्र करने के लिए योद्धाओं की सृष्टि हो, जो कुछ हद तक ठीक भी है । इसमें न्याय भी है, इसीलिए मयूर ने शिल्प योद्धाओं की सृष्टि की । आज जो राजा शिल्प योद्धाओं की सृष्टि चाहता है, हो सकता है, वह कल आकांक्षाओं के बहकावे में आकर कल्पवृक्ष चाहे या कामधेनु की माँग पेश करे । एक शिल्पी होने के नाते विलक्षण शिल्पों को पत्थरों पर छीलना ही उसका एकमात्र काम है । मंदिर का निर्माण करके उसने यह काम पूरा कर दिया । सजीव शिल्पों को निरंतर छीलते रहने का काम उस सृष्टिकर्ता का है । जो काम अपने से नहीं हो सकता, उस काम को अपने ऊपर लेनेवाले किसी न किसी से हार कर रहेंगा । इस कारण मयूर सम्मान के लोभ में नहीं फंसा और काम पूरा होते ही, किसी से बताये बिना कहीं चला गया।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा ।

(आधार: सुचित्रा की रचना)

भारत की पौराणिक कथाएँ - २४

शैतान की अग्निपरीक्षा

योगी आलोकानन्द का आश्रम एक जंगल में था। एक दिन उन्होंने अपने सब शिष्यों को बताया कि वे अपना शरीर छोडनेवाले हैं। उनकी आयु सौ से ऊपर हो चुकी थी और अपने एक शिष्य धीरानन्द को उन्होंने अपना उत्तराधिकारी बनाने के लिए तैयार किया था।

एक दिन गुरु ने धीरानन्द को अकेले में बुला कर कहा, ''आश्रम के जितने पावन पदार्थ हैं उन्हें अनादर या उपेक्षा की दृष्टि से कभी न देखना और उनकी समुचित देखभाल करना। जो भी हो, तुम्हें वहाँ रखे एक सन्दूक के एक कोने में विचित्र आकार का एक पत्थर मिलेगा। उसे तुम शान्ति का कोई स्तोत्र पढ़कर नदी में फेंक देना।''

''यदि आप बुरा न मानें तो क्या मैं जान सकता हूँ कि उस पत्थर में विशेषता क्या है?'' धीरानन्द ने उत्सुक होकर पूछा।

''यह मुझे किसी तांत्रिक मित्र ने दिया था। पत्थर के अन्दर एक छोटा शैतान है। यदि कोई व्यक्ति पत्थर को जमीन पर पटक दे तब शैतान बाहर आ जायेगा और करने के लिए कुछ काम मांगेगा। वह सचमुच का कोई उपयोगी काम नहीं कर सकता, केवल छोटा-मोटा चमत्कार कर सकता है, जैसे - हाथ में कोई छोटा पदार्थ रख देना अथवा कुछ अनोखी आवाजें निकाल कर लोगों को चकित कर देना या हवा में कुछ चीजें लटका देना आदि - आदि । कठिनाई यह है कि एक बार बाहर आ जाने पर शैतान चुपचाप क भी नहीं बैठेगा। यह अपने मालिक को वैसे ही कामों के लिए तंग करेगा।

इसे शान्ति तभी मिलेगी जब पत्थर को नदी में फेंक दिया जायेगा।'' गुरु ने समझाया । फिर उन्होंने आगे बताया, ''लेकिन यदि एक बार वह बाहर आ जाये तो पत्थर में वापस कभी नहीं जायेगा और न उसे छोड़ेगा जो उसे बाहर निकालने के लिए जिम्मेदार है। वह पाँच वर्षों के पश्चात स्वयं अदृश्य हो जायेगा।''

इसके बाद शीघ्र ही गुरु का स्वास्थ्य गिरने लगा। उनकी हालत गंभीर हो गई । शिष्यगण उनकी सेवा में व्यस्त हो गये । गुरु के देहत्याग के एक दिन पश्चात धीरानन्द को पत्थर की याद आई और उसने उसे निकालने के लिए सन्दूक खोली। किन्तु यह क्या! पत्थर वहाँ नहीं था। उसने गुरु की सभी सन्दूकों में उसे ढूंढा, किन्तु व्यर्थ!

दो दिन गुजर गये। एक अन्धेरी रात को किसी ने धीरानन्द का दरवाजा खटखटाया। उसने दरवाजा खोला। दरवाजे पर गुरु का एक शिष्य चन्द्रन खड़ा था। वह जंगल के निकट एक गाँव में रहता था और वह प्रायः आश्रम में आया करता था।

''क्या बात है? तुम इतने परेशान क्यों लग रहे हो?'' धीरानन्द ने पूछा।

''मित्र, मैं बहुत परेशान हूँ।'' चन्द्रन ने कहा। उसने तब यह स्वीकार किया कि उसने अलौकिक पत्थर के बारे में गुरु और धीरानन्द की बातचीत सुन ली थी।

''मुझे दुख है कि मैं उस पत्थर को चुराने का लालच रोक न सका। आखिर यह अ ाप के लिए बेकार था, क्योंकि इसे आप नदी में फेंक देते। मैंने इसे जोर से जमीन पर दे मारा और सचमुच एक शैतान प्रकट हो गया। इसे कोई और नहीं, लेकिन मैं देख सकता था। उसने काम मांगा। मैं गाँव के चौक पर गया। वहाँ बहुत से लोग एकत्र थे। मैंने उन्हें चमत्कार दिखाने का वचन दिया। मैंने शैतान से एक झाड़ी में आग लगाने के लिए कहा। उसने वैसा ही किया और झाड़ी से लपटें उठने लगीं। फिर मैंने उसे आग बुझाने के लिए कहा। उसने यह भी कर दिया। गाँववाले चकित थे लेकिन बहुत प्रसन्न नहीं थे। जैसे ही मैं घर वापस आया कि शैतान ने कोई दूसरा काम करने के लिए माँगा। मैंने बाग के पौधों में पानी डालने के लिए कहा। इसने तुरन्त पौधों को उखाड़ दिया और उनमें पानी डाल दिया। मैं हैरान रह गया। मैंने उसे फटकारा लेकिन उसने न कुछ समझा और न उसे इसका खेद हुआ। पर वह हमेशा कुछ न कुछ व्यर्थ के चमत्कार पूर्ण काम मांगता रहा।

''मैंने उसे सोने की एक अंगूठी लाने को कहा। तुरन्त मैंने अपनी तलहथी पर एक अंगूठी देखी । लेकिन साथ ही मेरी बहन की अंगूठ ी गायब पाई गई। दूसरे शब्दों में, शैतान ने उसकी उंगली से अंगूठी निकाल ली थी।''

''क्यों नहीं तुम इसे अपने खेतों को जोतने के लिए कहते?'' धीरानन्द ने सलाह दी।

"मुझे डर है कि वह वैसा ही न कर दे जैसा उसने पौधों के साथ किया। इसे सिर्फ चमत्कार वाले काम में ही व्यस्त रखा जा सकता है, किसी अन्य काम में नहीं । किन्तु मैं पाँच वर्षों तक निरन्तर कैसे लोगों को चमत्कार दिखाता रहूँ? किसे इसकी जरूरत है? साथ ही, मेरे अपने काम का क्या होगा? मैं दो दिनों में ही पागल हो गया हूँ। वह शैतान केवल आधी रात में एक घण्टे के लिए विश्राम करता है और अपने में फिर से शक्ति भर लेता है। वह अभी यही कर रहा है। कृपया कोई उपाय बताइये जिससे उससे मुक्ति मिले।" चन्द्रन ने रुआँसा होकर कहा।

धीरानन्द ने कुछ देर के लिए सोचा और फिर चन्द्रन से कुछ कहा। तभी शैतान ने खिड़की से झाँका और चन्द्रन से काम माँगा।

"तुम्हारे लिए काम तैयार है," बाहर आकर प्रसन्न होते हुए चन्द्रन ने कहा। वह शैतान को अपने घर के पिछवाड़े में ले गया। वहाँ उसका कुत्ता लेटा हुआ था।

"अब, ओ शैतान के बच्चे, मेरेकुत्ते की पूँछ पर जरा नज़र डालो। यह टेढ़ी है न? इसे कुत्ते को बिना हानि पहुँचाये सीधी करनी है। जब काम पूरा हो जाये, तभी मेरे पास आना।" चन्द्रन ने उसे आदेश दिया ।

"इसे मैं चुटकी बजाते ही कर दूँगा।" शैतान ने घमण्डपूर्वक कहा। वह बैठ कर कुत्ते की पूँछ सीधी करने लगा। जैसे ही वह उसे सीधी करके छोड़ देता, पूँछ पुनः टेढ़ी हो जाती। शैतान बार-बार कोशिश करता पर पूँछ वैसी ही टेढ़ी रहती। कुछ देर के बाद कुत्ता उठ कर घर के सामने आ गया। शैतान भी जो अदृश्य रहता था, कुत्ते के साथ-साथ आया और पूँछ सीधी करने की कोशिश करता रहा।

चन्द्रन चुपचाप वहाँ से खिसक गया। एकसाल होने को आया लेकिन शैतान अभी तक उसके पास नहीं लौटा।

चन्द्रन जानता है कि पाँच वर्षों के बाद शैतान गायब हो जायेगा और कुत्ते की पूँछ हमेशा के लिए टेढ़ी की टेढ़ी रहेगी।

अगले दिन वह धीरानन्द के पास गया। "क्या अब तुम समझते हो क्यों हमारे गुरु कुछ व्यक्तियों के स्वभाव की तुलना कुत्ते की पूँछ से किया करते थे? कुत्ते की पूँछ के समान, जिसे सीधी करने की कितनी ही कोशिश के बाद वह टेढ़ी ही रहती है, उन व्यक्तियों का स्वभाव बदलने के भरसक प्रयास के बावजूद टेढ़ा ही रहेगा।"

दोनों हँस पड़े और चन्द्रन ने एक बार फिर पत्थर चुराने के लिए क्षमा माँगी।

फाँसी के तख्ते ने उसकी जान बचाई

जिम और बिल बकले नजदीक के शहर से घर लौट रहे थे । अचानक दो व्यक्तियों ने, जो झाड़ियों की ओट में छिपे हुए थे, उन पर हमला कर दिया । बिल की छाती में गोली लग गई थी इसलिए वह घोड़े पर से गिर कर वहीं मर गया । जिम किसी तरह बच कर भाग निकला। आह, दोनों भाई अपनी रक्षा नहीं कर सके, क्योंकि जान मारने की अनेक धमकियों के बावजूद वे निहत्थे थे ।

यह घटना अमेरिका में मिसिसीपी, कोलम्बिया के मेरियन काउण्टी में घटी ।

ऐसा मालूम होता है कि १९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में व्हाइट कैप्स नाम का एक गुप्त गिरोह उस इलाके के गरीब बागान मालिकों को हमेशा धमकाया और परेशान किया करता था । उनका एक आखिरी शिकार एक निग्रो था । उसने एक विधवा के फार्म पर की नौकरी छोड़ कर बकले भाइयों के यहाँ काम शुरू किया, क्योंकि इन्होंने उसे अधिक वेतन देने का वादा किया था । उसने उन जालिमों का नाम बताया जो उसे तंग कर रहे थे । जिम और बिल ने वादा किया कि वे इसकी शिकायत पुलिस में और शहर के ग्रैण्ड जूरी को करेंगे । उन बदमाशों ने दोनोंभाइयों को धमकी दी कि यदि उन्होंने ऐसा किया तो उन्हें जान से मार दिया जायेगा । लेकिन जिम और बिल ने दृढ़ निश्चय कर लिया था और वे अधिकारियों के पास गवाही देने चले गये । इसका बुरा नतीजा यह हुआ कि दोनों में से एक को अपनी कीमती जिन्दगी से हाथ धोना पड़ा ।

जिम को अपने भाई के हत्यारे की पहचान करने के लिए कहा गया । उसने बिल परबिस

नाम के एक युवक किसान का नाम बताया जो एक पुराने सम्मानित घराने से सम्बन्धित था जिसके नाम से निकटस्थ नगर परबिस प्रसिद्ध हो गया था।

सन्दिग्ध व्यक्ति को तुरन्त बन्दी बना लिया गया । मामला अदालत में पेश किया गया । बिल के तीन पड़ोसियों और दो रिश्तेदारों से बयान लिया गया । उन सब ने गवाही दी कि हत्या के समय आरोपी घर पर था । उसकी बन्दूक भी बहुत दिनों से प्रयोग में नहीं लाई गई थी । लेकिन जजों को उनकी गवाही पर शक था । इसलिए बिल परबिस को फाँसी की सजा दे दी गई । उसे मौत आने तक फाँसी के तख्ते पर लटकाया जाना था । ऊँची अदालतों में उसकी अपील को नामंजूर कर दिया गया ।

बिल परबिस के सभी परिचित लोग चकित थे, क्योंकि उन्हें यह कभी विश्वास नहीं होता था कि वह ऐसा अपराध कर सकता है । गिरजा घर का धर्मगुरु जेल में उससे मिलने गया । उसने भी महसूस किया कि दण्डित व्यक्ति निर्दोष है । फाँसी की पूर्व-रात्रि में वह पुनः उससे मिलने आया । उसने देखा कि उसे जमीन से लगा कर जंजीर में बांध दियागया है लेकिन वह शान्त है। ऐसा बताया गया कि उसने पादरी से कहा, "मुझे अपनी आत्मा की नियति को लेकर कोई चिन्ता नहीं है ।"

दूसरे दिन का सवेरा आया । ७ फरवरी १८९४ । हजारों स्त्री, पुरुष, बच्चे चौक पर एकत्र थे । शेरीफ़ और उसके सहायकों ने दो-दो बार हर चीज़ की यह जाँच कर ली कि फाँसी के लिए सब ठीक-ठाक है । बिल परबिस, २१ वर्षीय युवा किसान को धीरे-धीरे लकड़ी के मंच पर लाया गया । शेरीफ़ ने, जिसने उसे कैद किया था और जिसे उसके अपराध पर कभी शक नहीं हुआ, निष्ठुरता पूर्वक पूछा, "बिल! क्या तुम्हें इस आखिरी घड़ी में कुछ कहना है?"

बड़ी ही शान्त और संयमित आवाज में दण्डित व्यक्ति ने घोषित किया, "मैंने कुछ नहीं किया! लेकिन जो लोग बाहर खड़े हैं वे मुझे बचा सकते हैं, यदि वे चाहें ।"

लेकिन अफसोस! बिल परबिस को बचाने कोई नहीं आया । उसके हाथों को पीठ के पीछे करके तथा उसके दोनों पैरों को मिला कर बाँध दिया गया ।

उसके सिर पर एक काला टोपा रख दिया गया। फाँसी का फन्दा सावधानी से उसकी गर्दन में डाल दिया गया। तब जब भीड़ सांस रोक कर प्रतीक्षा कर रही थी, शेरीफ ने जल्दी से कहा, ''भगवान तुम्हारी सहायता करे, विल परविस'', और लिवर को घुमा दिया।

सब कुछ क्षणों के लिए शान्त खड़े थे, लगभग पथराये हुए। वास्तव में, वे अपनी आँखों पर विश्वास न कर सके। उनके सामने, खुले फर्श-दरवाजे के ऊपर एक खाली फाँसी का फन्दा सवेरे की शीतल हवा में झूले की तरह झूल रहा था। विल परविस कहाँ गया? वह फाँसी के तख्ते के नीचे फर्श पर पड़ा था, बेहोश किन्तु साँस अब भी चल रही थी। काला टोप अब भी उसके सिर पर पड़ा था और उसके हाथ-पाँव अभी भी मजबूती से बंधे थे। यह कैसे हो गया? वह फन्दे से निकल कर कैसे नीचे गिर पड़ा? यह एक ऐसा रहस्य था जिसने सबको चकित कर दिया।

अधिकारीगण उसे दूसरी बार लटकाने के लिए फाँसी के तख्ते की ओर खींच कर लाने लगे। किन्तु धर्मगुरु ने हस्तक्षेप करते हुए कहा कि विधाता के हाथ ने उसे बचा लिया है। अब उसे पुनः फाँसी कैसे दी जा सकती है? भीड़ ने चिल्लाते गाते और नाचते हुए और चमत्कार के लिए भगवान का गुणगान करते हुए पादरी के प्रयास का साथ दिया। शेरीफ किंकर्त्तव्यबिमूढ़ हो गया और भीड़ की बढ़ती हुई उत्तेजना के भय से उसने आरोपी को फिर से जेल में डाल दिया।

लेकिन गवर्नर नाराज हो गया। विल परविस को अपराधी पाया गया था। उसे मृत्यु होने तक लटकाने की सजा दी गई थी। यदि वह बच गया तो उसे पुनः लटकाया जाना चाहिये था। यह उसकी सीधी-सादी दलील थी। विल के वकीलों ने राज्य के सुप्रीम कोर्ट में बड़ी सरगर्मी से अपील की लेकिन दुर्भाग्यवश शीर्ष अदालत ने उसे नामंजूर कर दिया।

इसलिए विल परविस को, एक चमत्कार द्वारा निश्चित मृत्यु से बच जाने के लगभग दो वर्षों के बाद, सन् १८९५ में १२ दिसम्बर को दूसरी बार फाँसी पड़ने वाली थी। आरोपी इस फैसले से क्षुब्ध नहीं हुआ और शान्त और अविकल बना रहा। उसे विश्वास था कि जिस शक्ति ने उसे एक बार बचाया है, वह शक्ति उसे दूसरी बार भी बचायेगी।

कोई नया सबूत नहीं मिला। अन्त में सरकार ने उसे कोलम्बिया के जेल से उसके अपने शहर परबिस के छोटे से जेल में स्थानान्तरित कर दिया, जिससे वह अपने जीवन के अन्तिम कुछ सप्ताहों में अपने परिजनों के निकट रह सके।

आधी रात थी। दूसरी बार फाँसी पड़ने में एक-दो दिन शेष थे। तभी जेल पर एक भीड़ टूट पड़ी और पहरेदारों पर काबू पाकर बिल परबिस को छुड़ा कर ले गई। गवर्नर आगबबूला हो उठा। उसने आरोपी को पकड़ने और उसे छुड़ाने वालों की जानकारी देनेवाले के लिए बड़ा इनाम घोषित किया। किसी ने इनाम का दावा नहीं किया जबकि उस छोटे से शहर परबिस के अधिकांश लोग जानते थे कि बचानेवाले कौन हैं और यह भी कि बिल परबिस वास्तव में पहाड़ियों के पार जंगल में अपने परिवार के साथ रह रहा है।

वर्तमान गवर्नर की अवधि पूरी हो गई। उसके उत्तराधिकारी ने अपने चुनाव प्रचार के समय बिल की सजा को कम कर देने का वादा किया था। बिल परबिस ने आशा छोड़ दी थी। नये गवर्नर ने कार्यभार संभालने पर अपने वादे के अनुसार उसकी सजा को मामूली आजीवन कारावास में बदल दिया।

दो साल के बाद, हजारों नागरिकों द्वारा, जिसमें वह जज भी शामिल था जिस ने बिल परबिस पर मुकदमा चलाया था, हस्ताक्षर करके याचिका दायर की गई। अन्त में अभियोगी को क्षमा दान देकर मुक्त कर दिया गया। वह अपने फार्म में फिर काम पर लग गया। शीघ्र ही उसका विवाह गिरजा घर के धर्मगुरु की बेटी के साथ हुआ। कुछ ही वर्षों के बाद उन्हें ग्यारह छोटे-छोटे बच्चों के माता-पिता कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ।

बिल बकले की हत्या किसने की, यह एक रहस्य बना रहा!

कई वर्ष बीत गये। एक दिन जो बियड नाम का एक वृद्ध बागान-मालिक मृत्यु-शैय्या पर पड़ा था। उसने बड़े दुख के साथ स्वीकार किया कि उसने व्हाइट कैप्स के एक अन्य सदस्य के साथ मिल कर बकले की हत्या की थी। इस खबर से उस पूरे इलाके में सनसनी फैल गई। सरकार ने गलती के लिए माफी माँगी और पाँच हजार डालर्स का हरजाना बिल परबिस को दिया गया। क्या पहचान करने में गलती के कारण जिम बकले ने बिल परबिस को अपने भाई का हत्यारा बता दिया?

क्या यह मात्र संयोग था कि बिल परबिस एक सुनिश्चित मृत्यु से बच निकला? या जैसाकि उसका स्वयं का और उसके शुभ-चिन्तकों का दृढ़ विश्वास था कि चमत्कार उसकी अटल निष्ठा और सच्ची प्रार्थनाओं के उत्तर में दी गयी भागवत-कृपा का परिणाम था?

अलबिदा, स्कूल बैग्स!

एक लोकप्रिय टी.वी. तुकबन्दी प्रदर्शन में स्कूल जाते हुए तीन छोटे बच्चों की पीठ दिखाई गई है। उनके बस्तों की नाम पट्टी पर लिखा था - एल के जी, यूकेजी और पाँच के जी - अन्तिम शायद बस्ते के अन्दर की किताबों का वजन था । संसद में भी इस समस्या पर विचार किया गया कि क्या बच्चों के लिए इतनी किताबें हर रोज स्कूल में ले जाना जरूरी है ।

एक सरकारी संस्था केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने, जो पूरे देश में केन्द्रीय विद्यालयों का संचालन करता है, बच्चों पर लादे गये इस भार को कम करने की पहल की है। शुरुआत करने के लिए, कक्षा एक और दो के छात्र भविष्य में स्कूल में किताबें नहीं ले जायेंगे ।

उनकी सभी पाठ्यपुस्तकें और कॉपियाँ स्कूल में ही रहेंगी और शाम को अथवा सप्ताह के अन्त में अध्ययन के लिए बच्चे उन्हें घर नहीं ले जायेंगे ।

ऐसा इसलिए कि उन्हें कोई गृह-कार्य नहीं दिया जायेगा और वे अपने अवकाश के समय को मन पसन्द ढंग से बिताने के लिए स्वतंत्र रहेंगे । जैसे-खेलना, किताबें पढ़ना, टी.वी. देखना या बागवानी जैसी किसी शौकिया गतिविधि पर काम करना आदि । यह निर्णय कई महीनों तक शोध तथा वैज्ञानिक अध्ययन के पश्चात लिया गया ।

संगठन भविष्य में इस नई योजना के अन्तर्गत अधिक कक्षाओं को लाने पर विचार कर रहा है ।

राजकुमार और अनार
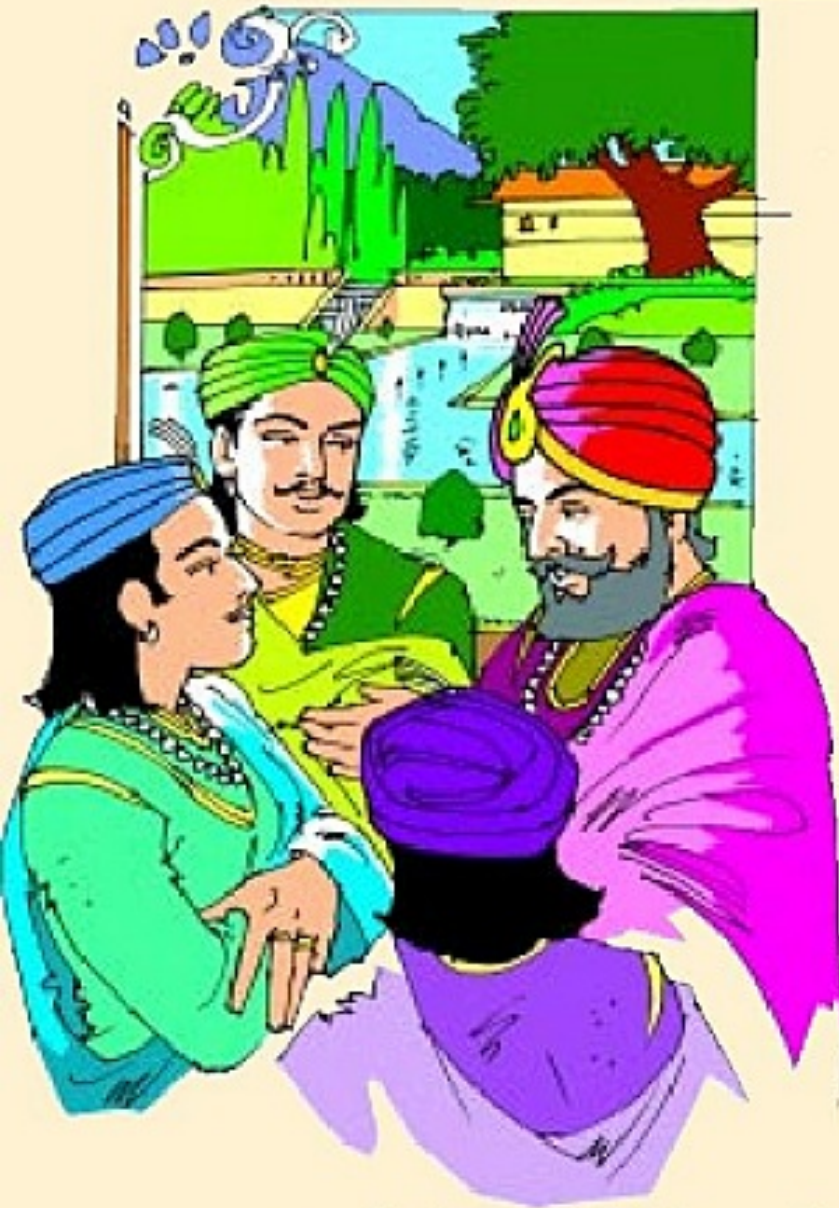
बहुत समय पहले की बात है, किसी राज्य में एक परोपकारी राजा राज्य करता था । उसके तीन पुत्र थे । बड़े होकर तीनों सुदर्शन युवक हुए। कद-काठी में तीनों एक से दिखते थे और तीनों पर ही उनके पिता ने एक समान प्रेम बरसाया था । एक लम्बे समय तक तीनों राजकुमार युद्ध कलाओं तथा राज्य संचालन सम्बन्धी विभिन्न प्रकार की शिक्षा और कौशल प्राप्त करने के लिए राजधानी से बाहर रहे । उनका प्रशिक्षण पूरा होने पर राजा चाहता था कि अब वे महल में ही रहें और अपनी जिम्मेदारी संभालें । राजा ने सोचा कि अब उनके विवाह का भी समय आ गया है । तीनों के लिए योग्य कन्या खोजने में भी समय लगेगा, यह सोच कर राजा ने न केवल राज्य के हर कोने बल्कि पड़ोसी राज्यों में भी संदेश वाहक भेजे । उनमें से एक संदेशवाहक ने आकर एक सुन्दर कन्या के विषय में बताया । यह एक नर्तकी की कन्या थी । उस संदेशवाहक के मुख से तीनों राजकुमारों का वर्णन सुनकर नर्तकी ने उससे कहा कि वह बड़े राजकुमार से अपनी पुत्री का विवाह करना चाहती है । वह चाहती थी कि संदेश वाहक यह प्रस्ताव राजा के सामने रखे । नर्तकी को पूरा विश्वास था कि बड़ा बेटा ही राजा का उत्तराधिकारी होगा, अतः उससे विवाह कर के उसकी बेटी भी महारानी बनेगी ।

राजा ने देखा था कि उसके दूसरे पुत्र का रुझान संगीत और कला की तरफ है अतः वही इस कन्या के योग्य वर होगा । किन्तु राजा अपनी

पसन्द को बलपूर्वक नहीं थोपना चाहता था। उसने तय किया कि वह उचित वर के चुनाव के लिए उनकी परीक्षा लेगा। उसने तीनों पुत्रों को बुलाया और उन्हें नर्तकी और उसकी बेटी के बारे में बताया। राजा ने उनसे कहा कि उन्हें छः महीने की यात्रा पर जाना होगा। और वापसी में उन्हें नर्तकी की बेटी के लिए उपहार ले कर आना होगा। उपहार ऐसा होना चाहिए, जैसा इसके पहले पूरे राज्य में किसी ने न देखा हो। राजाने तीनों को तीन अलग-अलग दिशाओं में सर्वथा अनजान जगहों पर जाने की आज्ञा दी। राजा ने उन्हें कहा कि जिसका उपहार सबसे आकर्षक होगा, नर्तकी की बेटी से उसीका विवाह किया जाएगा।

तीनों राजकुमार प्रशासन के नीरस कामों से दूर जाने से खुश थे। दूसरे दिन वे घोड़े पर बैठे और अलग-अलग दिशाओं को चल पड़े। चलने से पहले उन्होंने आपस में तय किया कि छः मास बाद वे वापसी में एक निश्चित स्थान पर मिलेंगे, उसके बाद एक साथ महल में लौटेंगे।

सबसे बड़ा राजकुमार पूर्व दिशा में गया, दूसरे पुत्र ने पश्चिम का रास्ता चुना और सबसे छोटा दक्षिण को गया। बड़ा पुत्र कई दिन तक चलता रहा। वह स्थान-स्थान पर रुकता, विभिन्न शिल्पों की जानकारी लोगों से लेता, पर उसे कहीं कुछ विशेष न दिखा। अब वह बेचैन-सा होने लगा, क्या उसे खाली हाथ लौटना पड़ेगा। अन्ततः वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचा, जहाँ उसे कुछ विचित्र चीजें दिखीं। वहाँ पक्षी मनुष्य की भांति बोलते थे और एक ही वृक्ष पर तरह-तरह के फल लगते थे। उसने सोचा कि किसी पक्षी को पकड़ना संभव नहीं और फल तोड़ कर महल क्या ले जाना, अतः उसने यह विचार त्याग दिया। फिर भी उसे लगा इस स्थान की पूरी खोज बीन से संभवतः उसे कोई सफलता मिले। तभी उसने देखा, एक आदमी कालीन बेच रहा है, जोबहुत भव्य कोटि के थे। राजकुमार घोड़े से उतर कर उसके पास गया। उस आदमी ने उसे कुछ कालीन दिखाए। राजकुमार को उनमें से एक बहुत पसन्द आया। पूछने पर उस आदमी ने

जिसके सारे खिड़की-दरवाजे खुले थे पर उसमें रहने वाला कोई नहीं था। दुकानों में भी हर प्रकार की चीजें सजी थीं, मगर कोई दुकानदार नहीं। उसने सोचा, यह सचमुच आश्चर्य जनक है। तभी उसने पेड़ से बहुत नीचे लटकते अनार देखे। वह उसे तोड़ने ही वाला था कि अचानक कहीं से एक माली आ पहुँचा, "फल को मत तोड़ो।" उसने आदेश के स्वर में कहा। 'क्यों? राजकुमार ने पूछा। "ओह! इस वृक्ष के फल अनमोल हैं।" माली ने उत्तर दिया। "किन्तु मुझे बताओ तो, कितनी कीमत है इनकी?" राजकुमार ने आग्रह किया माली ने कहा, "प्रत्येक फल की कीमत पाँच हजार रु. है।"

पूछने पर राजकुमार को ज्ञात हुआ कि ये विशेष फल हैं, जिनमें किसी भी रोग को ठीक करने की क्षमता है। सिर्फ इतना ही नहीं, यदि

कहा कि वह उसे पाँच हजार में बेचेगा। राजकुमार ने पूछा कि आखिर वह इतना अधिक मूल्य क्यों मांग रहा है। तब उस आदमी ने कहा कि इस कालीन पर बैठ कर चाहने से, यह उस व्यक्ति को उस स्थान पर उड़ कर ले जाएगा जहाँ वह जाना चाहता है। यह जानने पर राजकुमार ने बिना हिचके वह कालीन खरीद लिया और वापसी की यात्रा शुरू की।

दूसरा राजकुमार भी जो पश्चिम की ओर गया था, विभिन्न जगहों पर गया, पर उसे भी ऐसा कुछ न मिला जिसे वह नर्तकी की बेटी के लिए खरीद सके। एक स्थान पर उसने एक घर देखा,

इसे काट कर उसके मोती जैसे दाने निकाल लिए जाएँ तो यह पुनः जुड़ कर इस प्रकार बन्द हो जाएगा, मानो कभी काटा ही न गया हो। राजकुमार ने सोचा, यह सचमुच एक अनोखा उपहार होगा, और उसने उसे खरीदने का निश्चय किया। अनार खरीदने के बाद वह भी अपने राज्य की ओर लौट पड़ा।

अब सबसे छोटाराजकुमार, जो सुदूर दक्षिण की ओर गया था, एक ऐसे अद्भुत नगर में जा पहुँचा, जहाँ की इमारतें कांच की बनी थीं और जो बाहर से दर्पण की भांति दिखती थीं। वहाँ के लोग कांच की बनी पोशाक पहनते थे। कांच के

वस्त्र जो सख्त या सीधे न थे । ये कांच बस्त्र के समान खींचे और मोड़े जा सकते थे, तह लगाए जा सकते थे । जो भी हो ये दर्पण के समान चमकीले थे ।

राजकुमार ने एक सुन्दर फ्रेम में जड़ा एक दर्पण देखा । उसे हाथ में ले कर उसने दर्पण का मूल्य पूछा । उसे पता चला कि उसकी कीमत पाँच हजार रु. है ।

उसने कहा कि यह कीमत तो बहुत ज्यादा है और वह दुकान से जाने ही वाला था कि उसे बताया गया कि यह एक जादुई शक्ति वाला दर्पण है । यदि कोई इस दर्पण को सामने रख कर किसी व्यक्ति या स्थान के बारे में सोचे तो यह दर्पण उसे प्रतिबिंबित कर देता है । राजकुमार ने वह दर्पण उठाया और एक-एक कर के अपने भाइयों के बारे में सोचा और दर्पण ने उसे दिखाया कि वे दोनों अपनी वापसी के मार्ग पर हैं। अब राजकुमार ने बिना और कुछ सोचे वह दर्पण खरीद लिया और घोड़े पर सवार हो, अपने भाइयों से मिलने सरपट दौड़ा।

तीनों भाई लगभग एक ही दिन और समय पर उस स्थान तक पहुँचे, जहाँ उन्होंने मिलना तय किया था । जिस वक्त वे तीनों अपने-अपने अनुभव बाँट रहे थे, कि अचानक उन्हें उस लड़की का ख्याल आया जिसके लिए वे इन अनुभवों से गुजर रहे थे । उनकी तीव्र इच्छा हुई कि वे उसे देख पाते जिसके बारे में सुन कर उन्होंने केवल कल्पना की थी । छोटा राजकुमार अब अपने को न रोक सका और उसने अपना वह पैकेट निकाला जिसमें जादुई दर्पण था । उसने दर्पण में देखा और उसके मुँह से निकला, "ओह भगवान!"

उसके भाई चौंके और उन्होंने दर्पण में झांका, उन्होंने दर्पण में उस लड़की का प्रतिबिंब देखा । वह बिस्तर पर लेटी थी और अत्यधिक बीमार दिख रही थी। उसके पास बैठी उसकी माँ, उसे दवा पीने में मदद कर रही थी । अब दूसरे राजकुमार को उस अनार की याद आई, जो कि सी भी बीमारी को ठीक कर सकता था। उसने सोचा, "यदि मैं किसी प्रकार उसके पास पहुँच सकता और ये अनार के दाने उसे दे सकता तो वह निश्चित रूप से ठीक हो सकती है, किन्तु मैं इतनी जल्दी उस तक पहुँचू कैसे?

अब बड़े राजकुमार की बारी थी, कि वह सबको बताए कि वह लड़की के लिए कौन सा उपहार लाया था। उसने कालीन को खोला और अपने भाइयों से उस पर बैठने को कहा। कालीन तीनों भाइयों को लिये उड़ चला और शीघ्र ही उस घर तक जा पहुँचा जहाँ नर्तकी और उसकी बेटी रहती थी।

जब उन्होंने कहा कि वे लड़की को बिलकुल ठीक कर सकते हैं, तो नर्तकी बहुत खुश हुई। उसने उनका स्वागत किया।

दूसरे राजकुमार ने अनार को काटा और कुछ दाने उस लड़की को दिये। उसने उन्हें खा कर आँखें बन्द कर लीं। दूसरे ही क्षण वह उठ खड़ी हुई। मुस्कराते चेहरे के साथ बोली, "माँ मैं अब बिलकुल ठीक हूँ, मेरी बीमारी गायब हो गई।"

उसकी माँ ने तीनों युवकों का धन्यवाद किया। उन तीनों ने उसे बताया नहीं था कि वे राजकुमार हैं और उनमें से कोई एक उसकी बेटी से विवाह भी कर सकता है। माँ-बेटी ने उन्हें विदा किया। तीनों राजकुमार कालीन पर उड़ कर पुनः उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ उन्होंने अपने घोड़े छोड़े थे, और महल की तरफ चल पड़े।

वहाँ पहुँच कर वे अपने पिता से मिले और उन्हें सारा वृत्तांत कह सुनाया कि किन परिस्थितियों में उन्हें कन्या और उसकी माँ से मिलना पड़ा। अब राजा के लिए यह निर्णय और चुनाव करना कठिन हो गया कि उसके तीनों पुत्रों में से किसका विवाह नर्तकी की बेटी से होना उचित होगा। उसने तय किया कि उसे माँ-बेटी को ही इस चुनाव का अवसर देना चाहिए।
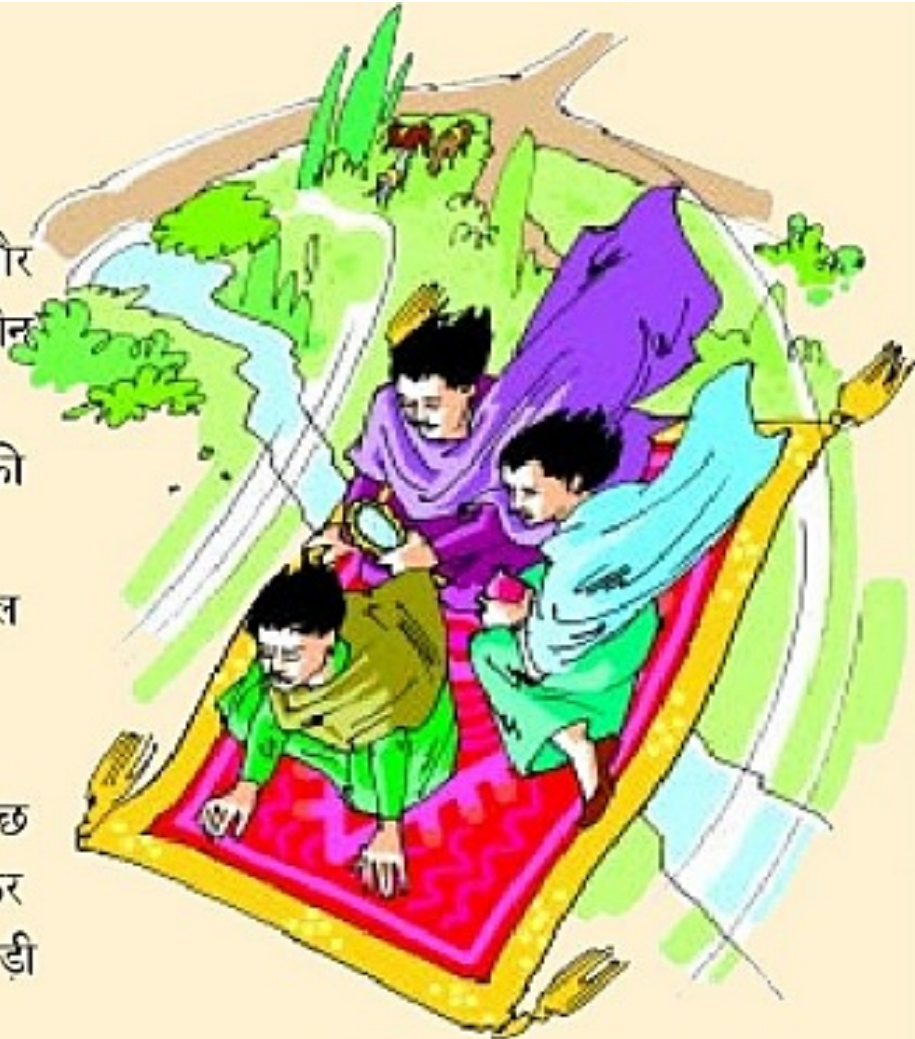
जब वे आईं तो राजा ने अपने मंत्रियों तथा सभासदों की उपस्थिति में उनका सादर स्वागत किया। राजा ने उन्हें अपने राजकुमारों के अनुभव की कथा सुनाई।

माँ-बेटी की तरफ घूम कर राजा ने कहा, "मेरे पुत्रों ने आपको अपना असली परिचय नहीं दिया, जब वे आपके यहाँ गये थे। आप दोनों ने उनकी सहायता के लिए उन्हें विदा करते समय कृतज्ञता प्रकट की थी। यदि आप

पिछली घटनाओं पर नज़र डालें तो देखेंगी कि, यदि मेरे सबसे छोटे बेटे ने जादुई दर्पण में न देखा होता तो उन्हें पता भी नहीं चलता कि तुम्हारी बेटी इतनी बीमार है । मेरा दूसरा पुत्र जो अनार लाया था, और उसकी चामत्कारिक शक्ति जानता था, उस तक नहीं पहुँच सकता था यदि मेरे बड़े पुत्र ने अपने अद्भुत उड़ने वाले कालीन का प्रयोग न किया होतो। आपको महसूस होगा कि आपकी पुत्री को स्वास्थ्य-लाभ कराने में उन तीनों का ही समान योगदान रहा है । मैंने तीनों को बुलाया है, कृपया आप इस निर्णय में मेरी मदद करें कि उनमें से किसे आपका दामाद बनाना उचित होगा।''

राजा ने तीनों पुत्रों को बुलवाया । नर्तकी और उसकी बेटी एक बार फिर उन्हें देख कर बहुत खुश हुईं । इस बार वे राजकुमारों की पोशाक में सज्जित थे ।

कुछ क्षण तक वे उन सुदर्शन युवकों के चेहरों से निगाहें न हटा सकीं । फिर माँ ने राजा की तरफ मुड़ते हुए कहा, ''आपके दूसरे पुत्र को ही असली श्रेय मिलना चाहिए, मेरी पुत्री के स्वास्थ्य लाभ का । यदि उसके पास यह अद्भुत अनार न होता तो अब तक मेरी बेटी बीमारी से मर गई होती । मेरा विश्वास है कि मेरे कहने से वह भी इस चुनाव पर सहमत होगी । आपका दूसरा बेटा ही मेरा दामाद और मेरी बेटी का पति बनने योग्य है ।

नर्तकी की बेटी ने जो अब तक मौन थी, एक नजर दूसरे राजकुमार पर डाली। उसे महसूस हुआ कि वह सचमुच तीनों में सबसे सुन्दर है। वह मुस्कराई और बोली, ''माँ, मैं आपसे सहमत हूँ।'' उसके चेहरे पर लज्जा छा गई ।

राजा बेहद प्रसन्न था, क्योंकि जब उसने पहली बार लड़की को देखा था तब उसने भी दूसरे राजकुमार को ही उसके लिए चुना था, क्यों कि उसका रुझान संगीत और कला की तरफ था। उसने घोषणा की, ''क्यों कि मेरे दूसरे पुत्र का विवाह पहले होगा, अतः उसकी पत्नी को ही महारानी का पद दिया जाएगा ।'' यही तो नर्तकी भी चाहती थी । धूमधाम के साथ विवाह संपन्न हुआ, उसके बाद नर्तकी भी महल में आ कर रहने लगी, जहाँ सबने उसे पूरा सम्मान दिया ।

भरा पत्तल

कमलपुर में रहनेवाले विद्यानाथ को इस बात का पूरा-पूरा विश्वास था कि किसी भी विद्या को वह आसानी से सीख सकता है और अन्यों की तरह इसके लिए उसे कठिन परिश्रम करने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

पहले कुछ दिनों तक उसने वेद सीखा। फिर उसके बाद संगीत, आयुर्वेद, ज्योतिष और अनेक विद्याएँ सीखता गया। इनमें से किसी भी विद्या में वह पारंगत नहीं हो पाया। इसलिए लोग उसके अधूरे ज्ञान को लेकर आपस में बातें करते रहते थे और उसकी हँसी उड़ाया करते थे। परंतु विद्यानाथ समझता था कि लोग ईर्ष्या के मारे ऐसी बेतुकी बातें कर रहे हैं और उनकी बातों में कोई सार नहीं है। वह कभी-कभी सोचता भी था कि जहाँ उसकी विद्या का आदर नहीं हो रहा है, वहाँ क्योंकर रहूँ।

उसके माँ-बाप अपने बेटे के अपूर्ण व अधूरी विद्या को लेकर चिंतित रहते थे। उन दिनों विद्यानाथ की मौसी विवाह का एक रिश्ता लेकर उनके घर आयी। विद्यानाथ की माँ ने अपने बेटे की व्यवहार-शैली का विवरण दुख-भरे स्वर में दिया। पर, उसकी मौसी ने कहा, ''विवाह हो जाये, तो सब ठीक हो जायेगा। जिस लड़की का रिश्ता लेकर मैं आयी हूँ, उसका नाम प्रियंवदा है। वह बड़ी सुंदर और होशियार है, विद्यानाथ की पत्नी होने योग्य है। वह उसका सहीमार्ग-दर्शन करेगी।''

विद्यानाथ के माँ-बाप ने बेटे को विवाह के लिए मनाया और प्रियंवदा से शादी करवायी। ससुराल आने के थोड़े ही दिनों के अंदर प्रियंवदा ने अपने पति को बखूबी समझ लिया। वह समझ गयी कि निस्संदेह ही उसका पति बुद्धिमान है, पर उसमें आवश्यकता से अधिक आत्मविश्वास है।

विनय रस्तोगी

एक दिन प्रियंवदा पानी लाने तालाब पर गई। उसने पति को भी अपने साथ आने को कहा। विद्यानाथ जाना नहीं चाहता था, पर अनिच्छापूर्वक ही सही, उसे जाना पड़ा। रास्ते में उन्होंने देखा कि झाड़ियों के पास एक लड़का छटपटा रहा है और उसके मुँह से झाग निकल रहा है। प्रियंवदा ने कहा, ''शायद साँप ने डँस लिया।''

इतने में विद्यानाथ पास ही के पौधों से पत्ते तोड़कर ले आया, उनका रस निचोड़ा और लड़के के मुँह में डाल दिया। उस जगह पर भी उसने वह रस निचोड़ा, जहाँ साँपने डँसा था। पंद्रह मिनटों के अंदर ही वह लड़का उठकर खड़ा हो गया। यह देखकर प्रियंवदा को अपने पति के वैद्य ज्ञान पर बिश्वास हो गया।

इस घटना के एक सप्ताह के बाद पास ही के गांव में एक संगीत सभा हुई। प्रियंवदा अपने पति के साथ वहाँ गयी। संगीत कार्यक्रम के समाप्त होने के पहले ही विद्यानाथ ने, प्रियंवदा से कहा, ''इस संगीतज्ञ का संगीत अटपटा है, न ही ताल है, न ही लय।'' कहता हुआ वह उठ पड़ा।

मजबूर होकर प्रियंवदा को अपने पति के साथ जाना पड़ा। रास्ते में उसने पति से बिनती की कि वे कोई गीत गायें। बड़े ही मधुर स्वर में विद्यानाथ ने मोहन राग में एक गीत गाया। प्रियंवदा को वह बेहद अच्छा लगा। उसने पति से कहा, ''इस विद्या में और प्रवीणता आप क्यों नहीं हासिल कर लेते? एक अच्छे संगीतकार बन सकते हैं।''
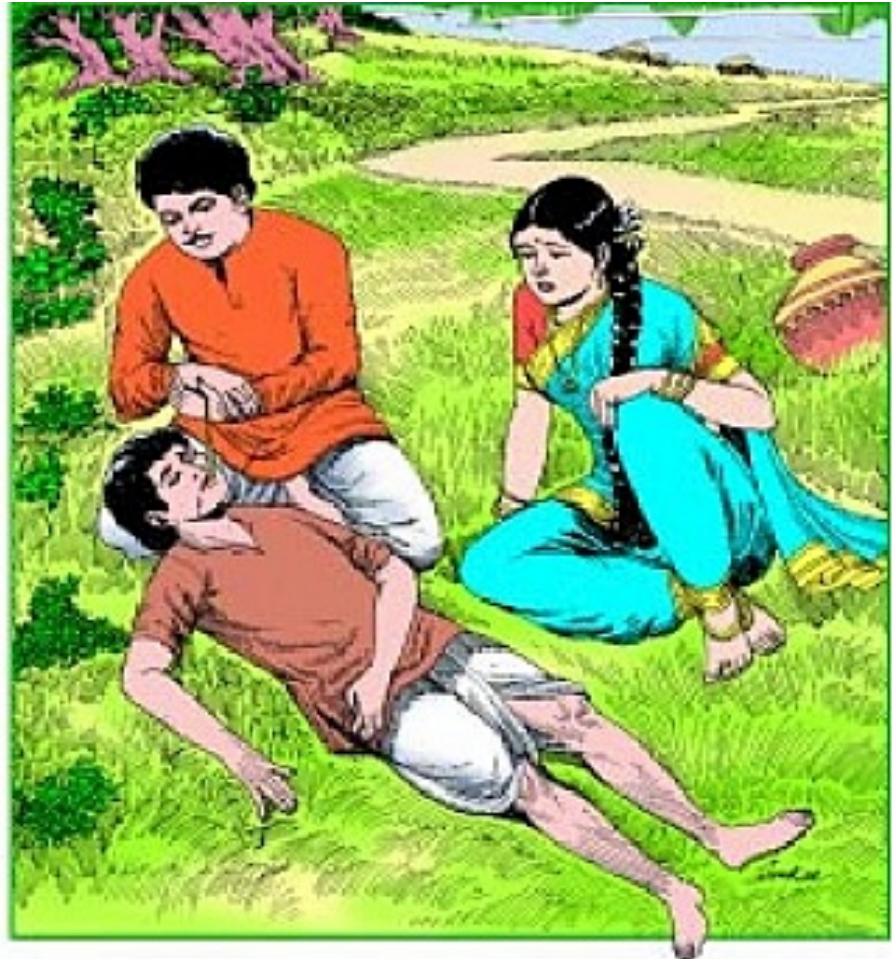
''अच्छा संगीतज्ञ होने के लिए योग्यताएँ क्या हों, तुम्ही बताओ,'' विद्यानाथ ने उलटा सवाल लिया।

''बस, किसी महान संगीतज्ञ के शिष्य बन जाइये।'' प्रियंवदा ने कहा।

''मुझसे भी बड़ा कोई संगीतज्ञ हो, तभी तो यह सवाल उठता है,'' कहते हुए विद्यानाथ आगे बढ़ने लगा। पति के उत्तर से प्रियंवदा समझ गयी कि ये कितने अहंकारी हैं।

इसके दूसरे ही दिन प्रियंवदा के मायके से कुछ पकवान लेकर एक नौकर आया। उसकी माँ ने अपनी बेटी के लिए कुछ पकवान भेजे, जिन्हें देने वह आया था। उसके माँ-बाप ने उस नौकर से यह कहकर भेजा कि लौटते समय वह

उनकी बेटी से एक पत्र ले आये जिसमें उसकी ख़ैरियत के समाचार लिखे हुए हों।

प्रियंवदा ने नौकर को खाना खिलाया और उससे सबेरे निकलने को कहा। रात को पूरे काम कर चुकने के बाद उसने एक ख़त लिखा और सो गयी। विद्यानाथ पत्नी के भाषा-ज्ञान कोजानने के लिए खत पढ़ने लगा।

''यहाँ सब सकुशल हैं, मेरे पतिदेव भरे पत्तल की तरह हैं। रुचिकर भोजन परोसा हुआ है, पर उसकी स्वादिष्टता के बारे में उस पत्तल को क्या मालूम है ! जो खाते हैं, उन्हीं को उनका स्वाद मालूम हो पाता है। मेरे पति भी बिलकुल ऐसे ही हैं। उनमें अच्छा वैद्य है, संगीतज्ञ है, और है, ज्योतिषी भी। परंतु ये सब एक दूसरे की रुकावट बने हुए हैं। इसी कारण आपके दामाद की कोई भी विद्या सफल और समर्थ नहीं हो पा रही है, परवान चढ़ नहीं पा रही है। आशीर्वाद दीजिये कि वह दिन आये, जब कि मैं गर्व के साथ कह सकूँ कि मैं एक संपूर्ण विद्वान की पत्नी हूँ।''

विद्यानाथ ने पूरा ख़त ध्यानपूर्वक पढ़ा। अब उसे अपनी कमियाँ समझ में आयीं। जिस पत्नी ने आज तकउसकी निंदा काएक शब्द भी अपने मुँह से नहीं निकाला, उसके दिल में छिपे दर्द को वह समझ गया। वह वैद्य वृत्ति को बहुत चाहता था। यह विद्या दूसरों की सेवा का मार्ग भी है। इसलिए उसने निर्णय कर लिया कि इस विद्या में निपुण बनूँगा और दूसरों की सेवा में रत रहूँगा।

विद्यानाथ उस रात को सो नहीं पाया। दूसरे दिन सबेरे ही उठकर उसने पत्नी से कहा, ''प्रियंवदा, तुम्हारी पीड़ा मैं जान गया। तुमने मेरी आँखें खोल दीं। उस दिन मैंने अपनी वैद्य विद्या के बल पर ही उस लड़के के प्राणों की रक्षा भी की। इसलिए उसी विद्या की शिक्षा एक साल तक अपने गुरु से पाऊँगा। तब तक हम दोनों को एक-दूसरे से अलग ही रहना पड़ेगा''।

विद्यानाथ में आये परिवर्तन को देखकर प्रियंवदा के साथ-साथ उसके माँ-बाप भी बहुत प्रसन्न हुए।

विद्यानाथ ने पुराने वैद्य शास्त्रज्ञ से एक साल तक शिक्षा पायी और एक सक्षम वैद्य बनकर लौट आया।

पाठकों के लिए एक कहानी प्रतियोगिता
सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ो:

दो यात्री सड़क पर झगड़ा कर रहे थे। जब वे हाथा-पाई पर उतरनेवाले थे तब राहगीरों ने हस्तक्षेप किया और उन्हें अदालत ले गये। "यह आदमी हीरे की मेरी अंगूठी को देखना चाहता था। जब मैंने इसे देखने के लिए दी तब इसने यह दावा किया कि यह अंगूठी इसकी है और मुझे वापस देने से इनकार कर दिया", एक यात्री ने शिकायत की।

दूसरे यात्री ने जज से कहा, "सर, यह मेरी है, और मैंने इसे सिर्फ़ देखने के लिए दी थी।"

जज ने अपनी उंगलियों के बीच में अंगूठी को रख कर ध्यान से देखा। "हे भगवान! आखिर राजा की अंगूठी मिल गई जो खो गई थी! जिसने भी इसे चुराई है, उसे फाँसी पड़ेगी। बोलो, तुम में से किसने यह अंगूठी चुराई?"

क्या अनुमान कर सकते हो कि दोनों यात्रियों में से हरेक ने क्या उत्तर दिया होगा। और यह भी कि जज ने कैसे सत्य का पता लगाया होगा?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में लिख कर हमारे पास भेज दो। लिफाफे पर लिखा होना चाहिये "पढ़ो और प्रतिक्रिया दो।" निम्नलिखित कूपन भी संलग्न करो।

अन्तिम तिथि : ३० अप्रैल २००४

नाम -- उम्र ------------ जन्म तिथि --------------------

विद्यालय -- कक्षा ------------

घर का पता --

-- पिनकोड ----------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर प्रतियोगी के हस्ताक्षर

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

अनोखा फौव्वारा

प्राचीन काल में काशी राज्य पर जब राजा ब्रह्मदत्त राज्य करते थे, उस समय बोधिसत्व का जन्म एक वणिक वंश में हुआ। बड़े होने पर बोधिसत्व पाँच सौ गाड़ियों पर अपना माल लादकर व्यापार किया करते थे।

एक बार बोधिसत्व का कारवाँ एक रेगिस्तान में पहुँचा। वह रेगिस्तान साठ योजन लंबा था। उसकी रेत बड़ी महीन थी। मुट्ठी में भरने पर रेत उंगलियों के बीच से खिसक जाती थी। वह प्रदेश रात के वक़्त ठण्डा होता था। मगर सूर्योदय के साथ धीरे-धीरे गरम होकर धक्-धक् करके जलनेवाले चूल्हे के समान हो जाता था। दिन के वक़्त उस रेगिस्तान में पैदल चलना मुश्किल था। इसलिए यात्री लोग रेगिस्तान को पार करने तक अपने लिए आवश्यक चावल, दाल, तेल, लकड़ी, पानी वगैरह चीज़ें गाड़ियों प लादकर रात के वक्त ही यात्रा करते थे। समुद्री यात्री जैसे रात के समय नक्षत्रों की मदद से अपनी दिशा का पता लगा लेते थे, वैसे ही रेगिस्तान के यात्री भी करते थे। सवेरा होते-होते वे अपनी यात्रा बंद कर देते, गाड़ियों को बृत्ताकार में खड़ा करके बीच में मण्डप जैसा बनाते, उस पर चांदनी जैसे पर्दे बांधकर धूप के तेज होने के पहले ही रसोई बनाकर खा लेते और फिर संध्या तक छाया में आराम करते।

बोधिसत्व ने इसी तरह यात्रा करके लगभग रेगिस्तान को पार किया। अब सिर्फ़ एक योजन की यात्रा बच रही थी। उन्होंने सोचा कि उस रात को वे लोग रेगिस्तान को पार कर सकते हैं। यों विचार कर शाम के वक़्त खाना होने के पहले अपने सेवकों के द्वारा जलावन तथा पानी फेंकवा दिया। इस तरह बोझ कम करने पर यात्रा तेजी के साथ चल सकती थी।

सब से आगे चलनेवाली गाड़ी में रास्ते का मार्ग दर्शक होता थ। वह रात भर जागता रहता, नक्षत्रों की गति का परिशीलन करते आगे की गाड़ी को कहाँ किस तरफ़ चलना है, चिल्ला-चिल्लाकर मार्ग दर्शन किया करता। मगर इस बार उसे गहरी नींद आ रही थी, तिस पर थका-मांदा था, इस कारण वह सो गया। कोचवान की असावधानी से बैल नियंत्रण खोकर उसी रास्ते पर चल पड़े, जिस रास्ते से वे लोग चले आये थे।

सूर्योदय के समय वह नींद से जाग पड़ा, नक्षत्रों की गति देख गाड़ियों को उल्टे रास्ते पर चलते भाँप गया और उन्हें लौटाने को कहा।

गाड़ियाँ तो मुड़ गईं। मगर जिस ख़तरे से वे लोग बचना चाहते थे, उसी ख़तरे में वे लोग फंस गये। सबेरा होते ही उन लोगों ने देखा कि पिछले दिन की शाम को वे लोग जहाँ से निकले थे, वहीं पर पहुँच गये हैं, मगर वहाँ पर पानी न था।

फिर से सबने गाड़ियों को वृत्ताकार में खड़ा किया और सारे आदमी निराश हो गाड़ियों के नीचे लुढ़क पड़े।

सब लोगों की भांति अगर बोधिसत्व भी हिम्मत खो बैठते तो सब का मरना निश्चित था। इसलिए बोधिसत्व उस ठण्डी वेला में इधर-उधर टहलने लगे और पानी के किसी सोते की बड़ी सावधानी से खोज करने लगे। आखिर उन्होंने एक जगह दाभों का झुरमुट देखा। अगर उसके नीचे गहराई में ही सही, पानी न होता तो वहाँ पर दाभ न उगता। यों विचार कर उन्होंने

कुदाल मंगवाकर एक युवक के द्वारा उस प्रदेश को खुदवाया। साठ हाथ गहराई तक खोदने पर फावड़े का पाल एक एक शिला से टकराया और खन् की आवाज़ सुनाई दी। तब सब लोग हताश हो गये। पर बोधिसत्व का गहरा विश्वास था कि उस शिला के नीचे ज़रूर पानी होगा। वे उस गड्ढे में उतर पड़े और शिला पर कान लगाकर सुनने लगे। शिला के नीचे पानी के प्रवाह की ध्वनि सुनाई दी।

इसके बाद बोधिसत्व गड्ढे से बाहर आये और बोले- ''भाइयो, अब हम लोग हताश हो चुप बैठे रह जायेंगे तो हम सब का मर जाना निश्चित है। इसलिए एक को नीचे उतरकर उस शिला को फोड़ना होगा। उसके नीचे पानी है। उसके बाहर निकलने पर हम सब बच जायेंगे।''

बोधिसत्व के मन में जो गहरा विश्वास था, वह और लोगों के मन में न था। फिर भी उनका सुझाव पाकर एक युवक गड्ढे में उतर पड़ा और कुदाल से सारी ताक़त लगाकर शिला पर दे मारा।

आख़िर वह शिला टूट गई। उसके नीचे दबा हुआ जल एक ताड़ के पेड़ के समान ऊपर उठा। इस पर सब की जान में जान आ गई। सब ने अपनी प्यास बुझाई, नहाया-धोया। जो पुरानी गाड़ियाँ थीं, उनके पहियों को काटकर जलावन का काम लिया।

रसोई बनाकर खाना खाया। बैलों को घास-पानी दिया। शाम तक आराम किया। रात के होते ही फिर से यात्रा चालू करने के पहले वहाँ पर एक ध्वज स्तम्भ गाड़ दिया, जिसका संकेत था कि वहाँ पर पानी है। फिर वे लोग सवेरा होने के पहले ही रेगिस्तान को पार कर अपने निर्णीत प्रदेश में पहुँचे।

वहाँ पर उनका माल तीन गुने ज़्यादा दर पर बिक गया। ख़र्च को काटकर न्यायपूर्ण लाभ बच रहा।

थोड़े दिन बाद बोधिसत्व अपने पूरे कारवाँ के साथ अपने नगर को लौट आये। व्यापार के द्वारा उन्होंने जो कुछ कमाया, उस धन से दान-धर्म करते वे सुख की जिन्दगी बिताने लगे।

विष्णुपुराण

क्षीर सागर मंथन के समय, राक्षस देवताओं का मज़ाक उड़ाते रहे और अपना पूरा भुज बल दर्शाते हुए सर्पराज को खींचते रहे। देवताओं ने अपने बल का पूरा-पूरा प्रयोग किया। उनके खींचने की इस प्रक्रिया में बासुकी महासर्प ने विष उगल दिया।

वह विष ज्वालाएं बिखेरना लगा। इन ज्वालाओं में कितने ही राक्षस जल गये। लग रहा था कि इस हलाहल से पूरा लोक ध्वंस हो जायेगा। उसी समय मंदर पर्वत भी समुद्र के अंदर डूब गया। सबने शिव से प्रार्थना की।

शिव ने हलाहल को निगल डाला और उसे कंठ में ही रोककर लोक की रक्षा की। वे गरल कंठ कहलाये गये। विपत्ति टली,पर पर्वत डूब गया। देवताओं ने विष्णु से प्रार्थना की।

विष्णु ने बड़े कच्छप के रूप में कूर्मावतार लिया और समुद्र में डूबे पर्वत को अपनी पीठ पर ढ़ोते हुए ऊपर ले आये।

कच्छप बनकर मंदर पर्वत को ढ़ोते हुए विष्णु ने बड़ी ही सावधानी बरती । पर्वताग्र पर बैठकर उन्होंने एक पांव से उसे दबाकर रखा, जिससे वह इधर-उधर न हिले-डुले। साथ ही देवताओं के साथ मिलकर वे समुद्र को मथने के काम में लगे रहे। यों विष्णु बहु रूपों मे दिखे।

सागर मंथन का काम सुचारु रूप से चलने लगा। क्षीर सागर से चंद्र, लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, कामधेनु, ऐरावत हाथी, उच्चैश्रवा घोड़ा, सुरा नामक नशा व उत्तेजना प्रदान करनेवाला पेय और कितने ही पदार्थ उत्पन्न हुए।

शिव ने कंठ के हलाहल के ताप के उपशमन

के लिए चंद्रमा को सिर पर धारण कर लिया और चंद्रशेखर बने।

लक्ष्मी देवी ने श्रीवत्स कौस्तुभ मणियों की बैजयंतीमाला पहनाकर विष्णु से विवाह किया। विष्णु लक्ष्मीकांत बने।

देवता सुरा पीकर सुर बने।

अंत में अमृत प्राप्त हुआ। आयुर्वेद के मूल विराट धन्वंतरी के रूप में अमृत कलश लिये, अनेक औषधियों को धारण किये, विष्णु पद्मासन पर आसीन हो, समुद्र से होते हुए प्रकट हुए।

अमृत के लिए जब क्षीर सागर मथा गया, तब प्रारंभ में हलाहल विष उत्पन्न हुआ। कितनी ही विशेषताओं के घटने के उपरांत और दैव सहायताओं के बाद अमृत प्राप्त हुआ, लक्ष्य की प्राप्ति हुई। इसीलिए श्रम से साधा जानेवाला काम ‘‘सागर मंथन’’ कहलाता है और यह उसका पर्यायवाची शब्द बन गया।

धन्वन्तरी के हाथ में जो अमृत कलश था, उसे राक्षस उड़ा ले गये और दावा किया कि यह हमारा ही है। राक्षसों और देवताओं में मुठभेड़ हुई। जब दोनों के बीच में यह छीना-झपटी हो रही थी, तब मंत्रमुग्ध कर देनेवाली जगन्मोहिनी वहाँ प्रत्यक्ष हुई। उसे देखकर राक्षस उसपर रीझ गये।

मोहिनी ने राक्षसों से कहा, ‘‘अमृत मुझे दो, मैं बाँटूँगी’’। उसकी बातों में आकर राक्षसों ने कलश उसके सुपुर्द कर दिया। राक्षस एक तरफ़ बैठे तो देवता दूसरी तरफ़। दोनों के बीच में कलश को कमर पर सटाये जगन्मोहिनी नृत्य करने लगी और अमृत बांटने को सन्नद्ध हो गयी। निश्चेष्ट होकर देवता एकटक उसी की तरफ़ देखने लगे। मदहोश राक्षस मोहिनी के सौंदर्य को देखते हुए तन्मय हो गये। उन्हें अपनी सुध नहीं रही।

देवताओं को भी पहले यह ज्ञात नहीं था कि आखिर यह मोहिनी है कौन, पर जब उन्होंने देखा कि वह देवताओं को ही अमृत पिला रही है और राक्षसों को छल रही है, तो वे जान गये कि मोहिनी कोई और नहीं, बल्कि साक्षात् विष्णु ही रस रूप पधारे। इसलिए वे चुपचाप अमृत पीते गये।

जहाँ देवता निर्लिप्त होकर अमृत का सेवन करते हुए अमरत्व पा रहे थे वहाँ दैत्यों ने जगन्मोहिनी के मायाजाल में फंसकर उन्मत्त होकर अमरत्व खो दिया।

राहु नामक एक होशियार राक्षस ने जान लिया कि जगन्मोहिनी राक्षसों को छल रही है। वह जल राक्षसी सिंहिका का पुत्र है। बड़ा ही मायावि है।

जब उसने देखा कि सच्चाई बताने पर भी राक्षस सुनने और विश्वास करने की स्थिति में नहीं हैं तो उसने स्वयं देवता का रूप धारण किया और देवताओं की पंक्ति में बैठकर अमृत पी गया। सूर्यचंद्र ने उसकी यह धूर्तता देखी और उन्होंने मंदर पर्वताग्र पर आसीन बहुरूपी विष्णु को यह विषय सूचित किया। विष्णु ने अपना चक्र राक्षस को मार डालने भेजा।

विष्णु के चक्र से बचने के लिए राहु ग्रहों में चक्कर काटता रहा और आखिर अंतरिक्ष में प्रवेश किया। चक्र ने वहाँ भी उसक पीछा किया और उसके सिर को धड़ से अलग कर दिया। अमृत की शक्ति के कारण सिर और धड़ सजीव ही रहे। सिर राहु और धड़ केतु के रूप में दो ग्रहों में परिवर्तित हुए और ग्रह-राशि में सम्मिलित हो गये। राहु केतु ग्रहों के कारण अब ग्रह नौ हो गये।

राहु केतु सूर्य चंद्र पर बहुत क्रोधित थे, क्योंकि उन्हीं के कारण उसकी पोल खुल गयी। प्रतिकार की भावना से वे अमावस्या व पूर्णिमा के पर्व दिनों में उनपर छाने लगे और उन्हें पीडित करने लगे। यों सूर्य चंद्र ग्रहण बने।

पूरा का पूरा अमृत देवताओं को पिलाकर मोहिनी अदृश्य हो गयी। राक्षसों को अपनी त्रुटि मालूम हो गयी। तब से लेकर वे विष्णु और देवताओं के कट्टर दुश्मन बन गये।

अमृत मंथन के दौरान विष्णु ने कूर्मावतार, धन्वंतरी का अवतार तथा मोहिनी का अवतार धारण किया।

धन्वंतरी अमृत के साथ-साथ औषधियाँ तथा औषधिवेद भी ले आये। वैद्य शास्त्र के अधिदेवता व वैद्यों के कुलदेव के रूप में धन्वंतरी की पूजा होने लगी।

जगन्मोहिनी विश्वमोहिनी मानी जाने लगी और सौंदर्य व विलास का प्रतीक बनी।

नारद जगन्मोहिनी अवतार की प्रशंसा करते हुए, जगन्मोहिनी राग को महती वीणा पर झंकृत करते हुए कैलास गये। पार्वती ने यह सुनकर नारद से कहा, ''अधम और नीच राक्षसों को छलने मात्र से क्या जगन्मोहिनी कहलाने के योग्य हो जायेगी''।

"हाँ माते, किसी को भी आनंद-सागर में डुबो देनेवाली - और अपने सौंदर्य व हाव-भावों से विश्व भर को अपने बश में कर लेनेवाली जगन्मोहिनी ही तो है," कहते हुए नारद वहाँ से चले गये।

पार्वती ने यह बात शिव से बतायी। शंकर मुस्कुराते हुए चुप रह गये । बाद में पार्वती के साथ नंदी बाहन पर आसीन होकर बैकुंठ गये और विष्णु से कहा, "तुम्हारे जगन्मोहिनी अवतार को देखने की मेरी तीव्र आकांक्षा है। इसी उद्देश्य से यहाँ आया हूँ।"

"संकट के निवारण के लिए कोई न कोई बेष धारण करना ही पड़ता है। तुम्हारे लिए भी यह बायें हाथ का खेल है,' विष्णु योंकहते हु अंतर्धान हो गये।

इतने में शिव ने जगन्मोहिनी को थोड़ी दूर पर फूलों की गेंद से खेलते और गाते हुए देखा। शिव सब कुछ भूल गये और उसके पास गये । पर जगन्मोहिनी उनके हाथ नहीं आयी और वह विश्व आकाश में घुस गयी। हाथ फैलाते हुए शिव उसका पीछा करने लगे। पार्वती स्तंभित होकर यह दृश्य देखती रह गयी।

शिव मोहिनी के इस लीला बिनोद को ब्रह्मा आदि देवता बड़े ही चाव से देखने लगे। नंदी निश्चेष्ट होकर देखता रहा। नारद महती वीणा पर शिवरंजनी राग को झंकृत कर रहे थे।

आगे-आगे जगन्मोहिनी और पीछे-पीछे शिव दौड़ते हुए गये और कुछ ही समय में दोनों दिखायी नहीं पड़े। पार्वती कैलास पहुँच गयी।

जगन्मोहिनी तेजमंडलों से होते हुए शिव केपूरे बिश्व में घुमाया और कैलास पहुँची। शिव को उसे छूने से मना करती हुई जब वह पार्वती के पास जाने लगी तब शिव ने उसकी कमर पकड़ ली।

"देखा, आपका पतिदेव कितना नटखट है?" कहती हुई भय के मारे वह पार्वती के पास खड़ी हो गयी।

देखते-देखते जगन्मोहिनी पार्वती केसम्मुख विष्णु के रूप मे प्रकट हुई।

"भ्राते, आप बिश्वमोहन जगन्मोहिनी केशवस्वामी हैं। यह सब कुछ शिव केशव लीला नाटक है। है न?" पार्वती ने विष्णु से पूछा।

"हाँ, हाँ, आपने ठीक कहा," कहते हुए वीणा बजाते नारद वहाँ आये। जगन्मोहिनी और

शिवरंजनी राग में हरिहर की लीलाओं का गान करते हुए तीनों लोकों में विचरने लगे।

शिव ने विष्णु से कहा, "अमृत भुलाकर राक्षस तुम्हारे जिस जगन्मोहिनी रूप को निहारने में मग्न हो गये, उसकी मैं प्रशंसा करता हूँ।

रस पिपासा असुरों की धरोहर है।

विष्णु ने मुस्कुराते हुए पर्वती से कहा, "कहीं ऐसा न हो, जब हमारी गंगा भविष्य में आकाश से पृथ्वी पर उतरने जा रही हो, तब तुम्हारे पतिदेव उसे कहीं तुम्हारी सौतन न बना लें।" कहते हुए विष्णु अदृश्य हो गये।

इसके बाद काल क्रम में विष्णु ने कर्दम प्रजापति, देवहुति का पुत्र बनकर कपिलावतार लिया। बचपन से ही तपस्या करके ज्ञान संपन्न होकर कपिल महामुनि के नाम से प्रसिद्ध हुए।

कपिल ने अपनी माता देवहुति को अनेकों तत्वों का बोधन किया, जो सांख्ययोग के नाम से प्रसिद्ध हुए। जब कपिल महर्षि पाताल लोक में निर्विराम एक गुफ़ा में तपस्या कर रहे थे, तब पृथ्वी पर सगर सम्राट सौवाँ अश्वमेध यज्ञ करना चाह रहे थे। इंद्र ने यज्ञ के अश्व को उस गुफा में छिपा दिया, जिसमें कपिल महर्षि तपस्या कर रहे थे । सगर के हज़ार पुत्र घोड़े को खोजते हुए पाताल लोक में पहुँचे । वहाँ उन्होंने कपिल महर्षि की गुफा देखी । उन्होंने उन पर आरोप लगाया कि उन्होंने ही घोड़े की चोरी की और उनका तप-जप केवल ढोंग है। कपिल ने आँखें जब खोलीं, तब सबके सब जलकर राख हो गये।
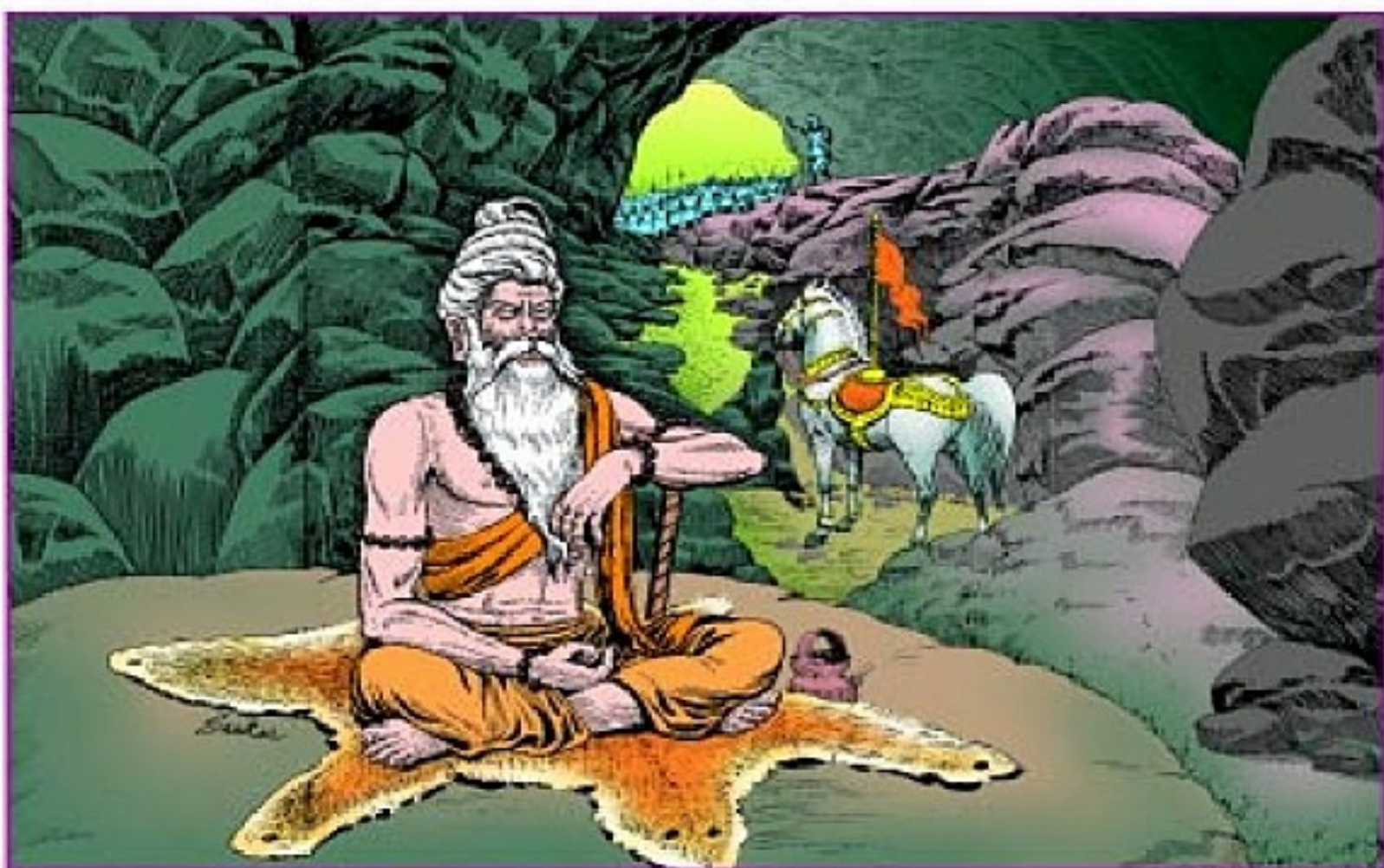
उन भस्म राशियों पर विष्णु पाद रखे गये और स्वर्ग में मंदाकिनी की तरह प्रवाहित हो रही गंगा को पृथ्वी पर ले आने के लिए सगर के प्रपौत्र भगीरथ ने घोर तपस्या की और गंगा को प्रसन्न किया। साथ ही गंगा के वेग को सह सकनेवाले शिव की तपस्या करके उन्हें भी प्रसन्न कर लिया।

गंगावतरण के समय गंगादेवी को देखकर शिव उसपर मुग्ध हो गये और उसे अपने जटाजूट में कसकर बांध लिया। फिर भगीरथ की प्रार्थना पर उसे थोड़ी मात्रा में बहने दिया। गंगा भगीरथ के साथ गयी और उसके पूर्वजों की भस्म राशियों पर प्रवाहित होकर उन्हें पुण्यलोक भेजा।

परमशिव गंगाधर बने और यों गंगा, पार्वती की सौत हुई। सनकनंदनादि मुनि कहलाये जानेवाले सनक, सनंद, सनत्सु, सनत्कुमार नामक चार मुनि ब्रह्मा के मानस पुत्र हैं। सदा वे बालक ही बने रहते हैं। विष्णु भक्ति में तत्पर होकर विष्णु का गुणगान करते हुए सभी लोकों में विचरते रहते हैं।

विष्णु के दर्शन करने वे वैकुंठ गये। सप्तद्वारों को पार करते हुए विष्णु मंदिर द्वार पर पहुँचे।

विष्णु के ही रूप के जय विजय वहाँ के द्वारपालक हैं। उनके चार-चार हाथ हैं। उन हाथों में चक्र, शंख, गदा व अभय मुद्राएँ हैं। उन दोनों ने मुनियों से कहा कि यह अंदर जाने का समय नहीं है।

तब सनकसनंदों ने कहा, "विष्णु दर्शन के लिए हमारी दृष्टि में कोई समय-असमय नहीं होता" कहते हुए उनकी परवाह किये बिना जब वे अंदर जाने को उद्यत हो गये तब द्वारपालकों ने गदाएँ उठाकर उन्हें रोका।

सनकादि मुनियों ने उन्हें शाप देते हुएकहा, "तुममें विष्णु द्वारपालक बने रहने की योग्यता नहीं है। राक्षस होकर जन्म लोगे।"

यह कोलाहल सुनकर द्वार खोलते हुए विष्णु, लक्ष्मी समेत वहाँ आये।

जय विजय ने मुनियों के शाप के बारे में उनसे बताया और अपना दुख व्यक्त किया। मुनिगण भी अपनी जल्दबाज़ी पर मन ही मन चिंतित हुए

दैत्य ने खो दी अपनी आग

यह बहुत पहले की बात है, जब मनुष्यों ने आग का प्रयोग सीखा ही था। उन्होंने उसे देखा अवश्य था किन्तु वे यह न हीं जानते थे कि आग को प्रज्ज्वलित कैसे किया जाए। फिजी द्वीप के रोट्रमा पर्वत की गहन गुफा में ट्रम्बा नाम का एक दैत्य रहता था। उसके भयानक दाँत आग में कोयले के समान दहकते रहते। जब कभी वह अपना मुँह खोलता, उसके दाँतों से निकलता तापकिसी भट्ठी के झोंके के समान लगता।

सौभाग्यवश वह ज्यादातर अपनी गुफा में सोया रहता और कभी जब वह अपनी गुफा से बाहर आता तो चहलकदमी करता हुआ पहाड़ से नीचे उतरता। उस समय उसकी भयानक रूप से तपती सांस मार्ग केसमस्त पौधों को झुलसा कर राख में बदल देती थी।

पर्वत की ढलान पर समुद्र तटीय ग्रामोंके लोग यही प्रार्थना करते थे कि वह अपनी गुफा में सदा के लिए सो जाए, और कभी बाहर ही न निकले।

वहीं गाँव में चार चतुर युवक रहते थे, जिनके नाम थे लेकाबाय, दाकुवाका, मासीलाका और तुईवेसी। वे बड़ी लालसा से दैत्य की जलती सासों को देखा करते और चाहते थे कि किसी तरह उसके मुँह से थोड़ी सी आग छीन लें।

"कितनी खुशहाल हो जाएगी हमारी जिंदगी, यदि यह आग हमारे पास आ जाए।" तुई वेसी ने कहा। "तब हमारी स्त्रियाँ खूब स्वादिष्ट भोजन पका सकेंगी।" दाकुवाका बोला। "हम अंधेरी रातों में गर्माहट और रोशनी पा सकेंगे।" मासीलाका ने कहा। "तब आओ, हम थोड़ी सी आग दैत्य के मुँह से चुरा लें," लेकाबाय ने कहा।

और तब इन साहसी युवकों ने सूखे नारियल के ताल पत्रों का बण्डल बनाया और सावधानी से पर्वत की गुफा में सरकते हुए घुस गए, जहाँ ट्रम्बा गहरी नींद में सोया हुआ था। उसकी सांस की हर

आवाजाही से आग की लपट बाहर आ ती और वापस उसके भयानक मुंह में समा जाती ।

वे गुफा में पड़े हुए पत्थरों और अन्य चीजों को एक तरफ हटाते हुए पंजों के बल आगे बढ़ते गए । वे नहीं चाहते थे कि आहट सेदैत्य जाग उठे ।

वे दैत्य के बहुत निकट पहुँच गए और नारियल के सूखे बंडलों को उसके मुख के निकट ले आए । दैत्य के मुंह से निकलती लपटें लहरा कर सूखे पत्तों तक पहुँचीं और वे जल उठे । उसी क्षण उत्तेजित तुई बेसी ने अपने हाथ के पत्रों को राक्षस के ओठों से रगड़ दिया । दैत्य जाग उठा । आँखें खोलने पर उसने चारों को जलते पत्तों के साथ भागते देखा ।

''मेरी आग चुराने का दुस्साहस किसने किया?'' टुम्बा चीखा । उसके मुख से आग की लपटें निकल रही थीं ।

''इस द्वीप में केवल मैं ही आग रख सकता हूँ।'' यह कहते हुए उसने नींद को झटक कर आँखें खोलीं, और पर्वत से नीचे उतरते हुए उन चारों युवकोंका पीछा किया। वे किसी प्रकार रेंगते हुए गाँव के निकट एक गुफा में जा पहुँचे । अपने हाथ में जलती हुई नारियल की पत्तियों को पकड़े हुए वे गुफा में घुसे और उसके मुँह को एक विशाल पत्थर से बंद कर दिया ।

''ओह!'' दाकुबाका बोला, ''आखिर हम टुम्बा से बच ही गए । इस गुफा के मुँह पर रखे पत्थर को वह भी नहीं सरका सकता ।''

''किन्तु हम यहाँ सदा के लिए तो नहीं रह सकते ।'' लेकाबाय ने सतर्क किया, जो उनमें सबसे ज्यादा व्यावहारिक था। ''हमें सोचने की आवश्यकता है कि हम किस प्रकार टुम्बा से पीछा छुड़ा के अपने घर पहुँचें ।''

उस समय टुम्बा गुफा के बाहर बैठा झुंझला रहा था, और चीख कर उन्हें बाहर आने को ललकार रहा था । गुस्से में पागल दैत्य अपने कान और नाक से धुँआ उगलने लगा । चारों युवक बाहर क्यों आते ! जंगल की आग भयानक लपटों में उठने लगी और दैत्य को बहुत तपन महसूस होने लगी । गुफा के अन्दर चारों युवक भी बाहर की आग को असुविधा जनक महसूस कर रहे थे ।

अब दैत्य और युवक दोनों ही अनुभव करने लगे कि यदि उन्हें अपना जीवन बचाना है तो इस

परिस्थिति से निकलने का कोई न कोई मार्ग जल्दी से निकालना होगा। ट्रम्बा ने पहल की, "मित्रो, यदि तुम मुझे अन्दर आने दोगे, तो मैं बहुत ही अच्छा गीत सुनाऊँगा।" वह नरमी से बोला।

युवकों को उपहास सूझा। उन्होंने गुफा के मुख पर रखे पत्थर को थोड़ा सा खिसका कर पतली सी दरार बना दी।

ट्रम्बा इस हल्की दरार से खुश नहीं हुआ। "मैं इतनी सी दरार से अन्दर नहीं घुस सकता, कृपया पत्थर को थोड़ा और सरकाओ!" उसने खुशामद की। वह मन मेंमन सोच रहा था कि गुफा में घुसते ही उन्हें अपनी सांसों से झुलसा डालेगा।

तभी लेकाबाय को हठात एक बढ़िया उपाय सूझा। अपने मित्रों से फुसफुसा कर उसने उन्हें कुछ बताया। अब चारों ने कंधे का जोर लगा कर उस विशाल पत्थर को थोड़ा और खिसकाया। दरार चौड़ी हो गई और ट्रम्बा ने गुफा में अपना सर घुसाया, तभी लेकाबाय ने जोर से कहा, "अ ब खिसकाओ!" और चारों ने जल्दी से उस विशाल पत्थर से पुनः गुफा का द्वार बन्द कर दिया। ट्रम्बा ने ऐसी कल्पना भी नहीं की थी। वह हड़बड़ाहट में कुछ भी न कर सका। उसका सर कुचल गया और दांत उखड़ कर बाहर निकल पड़े। उसके जलते हुए दांत ठंडे और काले पड़ गए।

चारों नवयुवकों ने मृत ट्रम्बा को घुसाया और गुफा से बाहर भागे। उन्होंने आस-पास के गाँवों के लोगों को पुकारा औरचिल्ला कर कहा, "हमने दैत्य को मारा डाला। उसके दांत अब और नहीं जलेंगे, लेकिन आग नष्टनहीं हुई है, वह हमारे पास है। अब हमारा जीवन खुशहाल होगा।"

अब गाँव वालों को ट्रम्बा का भय नहीं रहा, न ही उसकी जल्दी सांसों का। उन सबने मिलजुल कर आग का प्रयोग किया। अ ब वे आलू और मछली भुन कर पका सकते थे।

वज्रों का हार

हेलापुरी के निवासी गुप्तधनी नामक व्यापारी के घर में चौदह साल की उम्र का सोम शेखर काम करता था। शेखर का पिता भी इसी घर में काम किया करता था। बहुत पहले उसकी अकाल मृत्यु हो गयी थी। इस वजह से बचपन ही से शेखर इस घर में काम करने लगा। उसकी माँ उसके पिता के मरने के पहले ही मर गयी थी। गुप्तधनी के घर के पीछे की झोंपड़ी में वह रहता था।

गुप्तधनी हर महीने शेखर को वेतन देता था। भोजन और कपड़े भी उसे मुफ़्त मिल जाते थे, इसलिए वह उस रक़म को एक छोटे डिब्बे में सुरक्षित रखता था।

गुप्तधनी के घर में जिसकिसी को भी जो भी ज़रूरत पड़ती थी, शेखर पूरी करता था। सबके सब उसी पर निर्भर रहते थे।

एक दिन सबेरे जब शेखर कुएँ से पानी की बाल्टी खींच रहा था तब गुप्तधनी ने उससे कहा, ''सोम, इतना समय हो गया, पर तुमने अब तक दूध क्यों नहीं दुहा? बच्चे दूध पीने के लिए तरस रहे हैं।'' उसने कड़े स्वर में पूछा।

उस कर्कश आवाज को सुनकर शेखर नाराज़ हो गया, पर अपनी नाराजगी को छिपाते हुए उसने कहा, ''साहब, मेरा नाम सोमशेखर है, सिर्फ सोम नहीं। आपका इस तरह से संबोधन करना मुझे अच्छा नहीं लगता।''

गुप्तधनी उसके बोलने की इस शैली को देखकर भौचक्का रह गया। घर के सब लोग उसे सोम कहकर ही पुकारते रहते हैं। फिर भी उसने इसके पहले कभी भी कोई आपत्ति नहीं जतायी। वह मन ही मन सोचने लगा कि आज शेखर को क्या हो गया और क्यों ऐसी उल्टी सीधी बातें कर रहा है।

फिर भी अपनी अनिच्छा को प्रकट किये बिना उसने कहा, ''आगे से ऐसा ही बुलाऊँगा

कैलासनाथ

सोमशेखर प्रसादजी । क्या दूध दुहने का कष्ट उठायेंगे?''

संतुष्ट शेखर बड़े उत्साह के साथ दूध दुहने चला गया।

थोड़ी देर बाद दूध का लोटा लेकर जब शेखर आया तब गुप्तधनी की माँ ने उससे कहा, ''अरे सोम, घर में तरकारियाँ नहीं हैं। बाज़ार जाकर खरीदकर ले आना।''

शेखर एकदम नाराज़ हो उठा। उसने कड़े स्वर में कहा, ''रकम और थैली देना।''

उसके रूखे व्यवहार को देखकर गुप्तधनी की माँ अवाक् रह गयी। गुप्तधनी ने भी दूर से उसका बरताव देख लिया। उसे लगा कि उसमें यह जो परिवर्तन आया है, उसके पीछे अवश्य ही कोई सबल कारण होगा। तब से उस कारण को जानने का प्रयत्न करने लगा।

उस दिन रात को जब घर के सब लोग सो रहे थे, गुप्तधनी शेखर की झोंपड़ी के पास चुपके से गया। यह जानने के लिए अंदर वह क्या कर रहा है, उसने खिड़की से झांका। उस समय वह मद्धिम कांति में बज्र के हार को घुमा फिराकर ध्यान से देख रहा था। जंगल में जब लकड़ियाँ काटने के लिए वह गया था तब वह हार एक कौवे के घोंसले के पास की एक टहनी पर लटका हुआ था। कौआ शायद खाने की चीज़ समझकर उठा ले आया होगा और यह जानकर उसे टहनी पर डाल दिया होगा कि वह खाने की चीज़ नहीं है । गुप्तधनी अब जान गया कि शेखर में जो परिवर्तन आया है, उसकी वजह बज्रों का यह हार ही है।
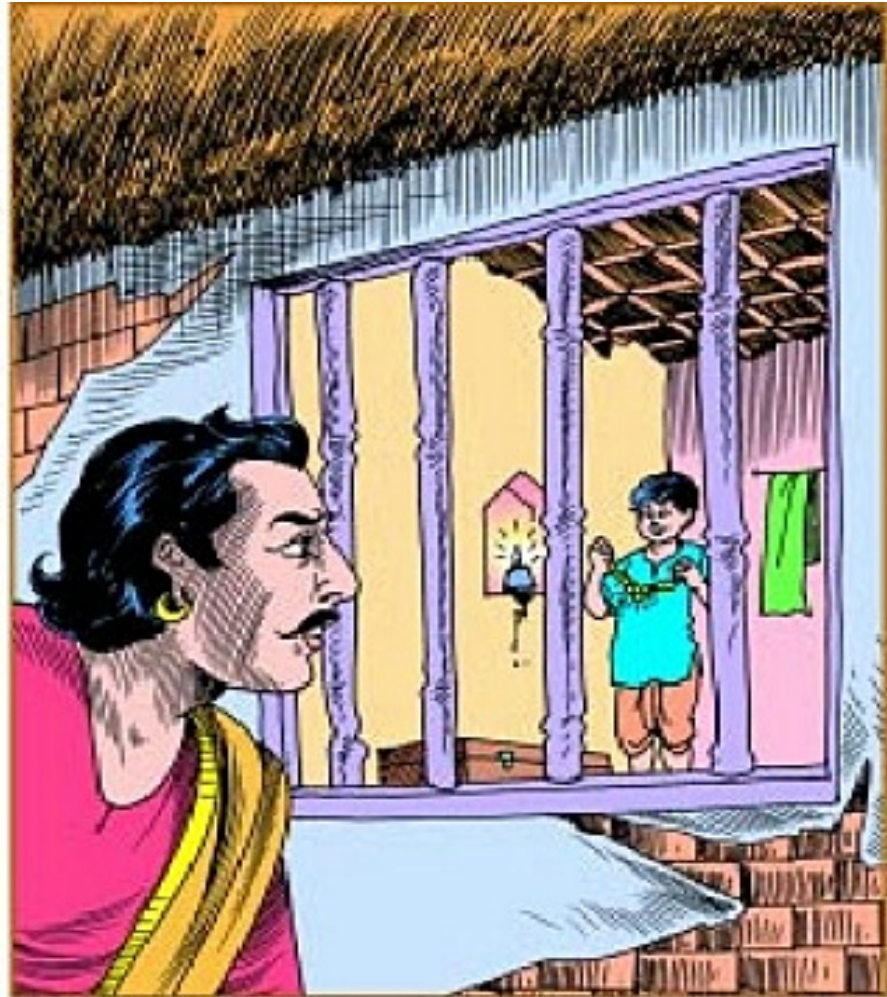
यों कुछ दिन गुज़र गये । उस साल गुप्तधनी के बग़ीचे में केले खूब फले। उसने व्यंग्य भरे स्वर में जानबूझकर ही शेखर से कहा, ''सोमशेखर प्रसादजी, केलों को सुगंधिपुरी की मंडी में दोनों जाकर बेच आयेंगे?''

शेखर ने 'हाँ' के भाव में सहर्ष सिर हिलाया । उसी दिन शाम को दोनों केलों के गुच्छों को बेचने मंडी गये। गुप्तधनी उन्हें एक दुकानदार को बेचकर लौटने ही वाला था कि शेखर ने उससे कहा, ''मालिक, मैं मंडी में घूमना चाहता हूँ और देखना चाहता हूँ कि दुकानों में कौन-कौन सी चीज़ें भरी पड़ी हैं।''

गुप्तधनी ने कहा, ''ठीक है। घूम आओ। मैं यहीं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा।''

आधे घंटे के बाद वह सिर झुकाकरगुप्तधनी के पास आया। धीमे स्वर में उसने कहा, ''मालिक, अब हम चलें।''

''जैसी आपकी इच्छा, सोम शेखर प्रसादजी,'' गुप्तधनी ने कहा।

शेखर ने बड़े ही दीन स्वर में कहा, ''मैं आपका नौकर हूँ।

आप ही की आँखों के सामने पैदा हुआ और पला । आप कृपया मुझे सोम ही कहकर बुलाइयेगा ।'' शेखर ने बड़े ही नम्र स्वर में कहा ।

आधे घंटे के अंदर उसमें इतना जो बड़ा परिवर्तन आया, इसका कारण गुप्तधनी की समझ में नहीं आया। वह आश्चर्य भरी आँखों से उसे देखने लगा। शेखर यह जान गया और कहने लगा ''मालिक, आप मुझे माफ़ करेंगे तो एक बात आपको कहना चाहता हूँ।''

गुप्तधनी ने कहा, ''हाँ, हाँ, निस्संकोच कहो।''

''एक हफ़्ता पहले मुझे वज्रों का एक हार मिला। बस, सपने देखने लगा। सोचने लगा कि उसे बेचकर एक घर खरीदूँगा, खेत खरीदूँगा और आराम से जिन्दगी काटूँगा। मेरे सोचने का ढंग ही बदल गया। अपने को संपन्न मानने लगा। उसे बेचने अभी-अभी गहनों की दुकान पर गया। उसने उस हार को नक़ली बता दिया। मैंने जोर देते हुए कहा कि वह हार नक़ली नहीं, असली है। मेरे हठ को देखते हुए वह नाराज़ हो उठा और उसने अपने नौकरों से मुझे पिटवाया और दुकान के बाहर कर दिया ।'' यह कहते हुए उसने वह हार दिखाया।

उसे ध्यान से देखने के बाद गुप्तधनी ने कहा ''तुम नौकर हो। मेहनत करोगे और भाग्य तुम्हारा साथ देगा तो एक नहीं, कितने ही वज्रों के हार खरीद सकते हो। जानते हो, उन लोगों को कितना दुख पहुँचा होगा, जिन्होंने इसे खो दिया। इसके मिलते ही तुम्हें पुलिस के सुपुर्द करना था। मेहनत की कमाई ही सच्चा धन है। धन हो या न हो, आदमी को संतुलित रहना चाहिये। अपनी व्यवहार शैली में परिवर्तन आने देना नहीं चाहिये। इसी में आदमी की प्रतिष्ठा और गौरव है। समझे?''

शेखर ने 'हाँ' के भाव में सिर हिलाया।

सबूत

वल्लभ नगर व्यापार के लिए सुप्रसिद्ध था। कितने ही देशों के लोग व्यापार के सिलसिले में वहाँ आते थे। एक बार दक्षिण क ा एक देशज वहाँ आया। उसके पास सिर्फ पाँच सौ रुपये ही थे। अपने लिए आवश्यक चीज़ें खरीदने केलिए वह बड़ी गली में घूमता रहा।

उस समय सामने से अचानक एक औरत आयी और उसका हाथ पकड़ लिया। कहने लगी, ''मेरे रुपयों की चोरी करके व्यापार करने चले?''

दक्षिण देशज स्तंभित रह गया। अपने को संभालते हुए उसने कहा, ''मैंने तुम्हारे धन की चोरी की! असंभव है। मैं तो कुछ भी नहीं जानता।''

लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गयी, पर वे इस फैसले पर नहीं आ पाये कि उन दोनों में से कौन झूठ बोल रहा है। लोगों में से एक ने कहा, ''गली में क्यों झगड़ रहे हो? न्यायालय पास ही है। वहाँ जाओ ।''

औरत ने परदेशी का हाथ कसकर पकड़ लिया और उसे न्यायालय में खींचकर ले गयी। उसने न्यायाधीश से कहा, ''महाशय, इस आदमी ने बाज़ार के बीचों बीच जबरदस्ती मुझसे पाँच सौ रुपये छीन लिये। यह लौटाने से साफ़-साफ इनकार कर रहा है। ये रुपये मुझे दिलाइये और मेरे साथ न्याय कीजिये।''

न्यायाधीश ने पूछा, ''क्या कोई सबूत है?''

'न' के भाव में उस औरत ने सिर हिलाया।

न्यायाधीश ने उस परदेशी से पूछा, ''तुम्हें कुछ कहना है?''

''महोदय, आवश्यक घरेलू सामग्री खरीदने आज सबेरे ही इस नगर में आया हूँ। मैं यहाँ किसी को नहीं जानता। यह औरत कौन है, मैं बिलकुल नहीं जानता। मेरे पास पाँच सौ रुपये हैं और वे सचमुच मेरे ही रुपये हैं,'' परदेशी ने कहा।

न्यायाधीश को लगा कि वह औरत सरासर

झूठ बोल रही है। अपने संदेह केनिवारण के लिए उसने एक चाल चली। उसने परदेशी से कहा, ''तुम्हारी बातों पर मुझे विश्वास नहीं होता। उसका धन उसे लौटा दो।''

कोई और चारा न पाकर परदेशी ने वे पाँच सौ रुपये उस औरत को दे दिये।

जैसे ही वह वहाँ से चली गयी, न्यायाधीश ने परदेशी को बुला कर धीमे स्वर में कहा, ''उसके पीछे-पीछे जाओ और वह धन उससे छीन लो। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।''

न्यायाधीश के कहे अनुसार परदेशी उस औरत के पीछे-पीछे गया। उसने उस औरत से उस धन को छीनने की भरसक कोशिश की, पर उसकी सारी कोशिशें बेकार हो गयीं। इस दौरान वहाँ भारी संख्या में लोग जमा हो गये।

वह औरत फिर से न्यायाधीश के पास आयी और कहने लगी, ''न्यायाधीश जी, आपने जो धन मुझे दिलवाया, वह यह आदमी मुझसे छीन लेना चाहता है। मुझे बचाइये।''

''क्या तुम सच कह रही हो? क्या किसी ने यह घटना देखी?'' न्यायाधीश ने पूछा।

''इन सबों ने यह घटना देखी। आप खुद इनसे पूछ लीजिये। सब लोगों ने देखा कि यह आदमी मुझसे ये रुपये छीन रहा था,'' कहते हुए उस औरत ने लोगों की भीड़ दिखायी।

''इनसे पूछने की ज़रूरत नहीं है। क्या उसने वे रुपये तुमसे छीन लिये?'' न्यायाधिकारी ने पूछा।

''मैंने ऐसा करने नहीं दिया। वह अपनी कोशिश में नाकामयाब रहा।'' औरत ने कहा।

''मैंने भी यहीं सोचा था। तुमसे धन छीनने की शक्ति इस आदमी में नहीं है। वह ऐसी कोशिश करता तो लोग उसे रोकते। पहली बार तो तुमने कहा था कि इस आदमी ने तुमसे रुपये छीन लिये। उस समय तो तुम दोनों के सिवा कोई और नहीं था। यह साबित हो गया कि ये रुपये इस परदेशी के अपने हैं। तुरंत वे रुपये उसे लौटा दो। एक और बार ऐसा करने की कोशिश करोगी तो तुम्हें जेल भिजवा दूँगा,'' न्यायाधिकारी ने कहा।

10
मुनि जयानन्द जान जाते हैं कि जंगल में जो शिशु उन्हें मिला था, वह राजकुमार है। शिशु की माँ की मृत्यु के वे साक्षी भी हैं। वे राजकुमार का राजचिह्न के साथ लॉकेट राजा शान्तिदेव के स्वामीभक्त जयनगर के सरदार को सौंप देते हैं। शान्तिपुर की गद्दी को अनधिकार रूप से हड़पने वाला वीर सिंह पड़ोसी राज्य अमृतपुर पर आक्रमण करने की तैयारी करता है। उसके सैनिक तूफान और नन्दिनी नदी की बाढ़ में फँस जाते हैं।
आर्य
अज्ञात राजकुमार
का रहस्य
चित्र :
गाँधी अय्या
अमृतपुर के सैनिक नन्दिनी के दूसरे किनारे पर से शान्तिपुर की सेना की त्रासदी को देखते हैं।
सैनिक और अस्त्र-शस्त्र बह कर किनारे लग जाते हैं।
आप हमारे ईश्वरीय वरदान बन कर आये।
कृपा करके मेरी मदद करो
आशा है बच जायेगा
क्या तुमने कहा कि नकाबपोश ने तुम दोनों को बचाया?
हाँ महाराज! मुझे केवल सन्देह है, लेकिन ...
मेरा अपना अनुमान है कि मेरा दामाद अभी जीवित है।
बसन्त यहाँ लोगों के बीच घूमता रहता है। वह शायद कुछ समाचार लाये।
मुझे डर है, वीरसिंह फिर से सेना भेज सकता है। बसन्त यह पता लगा सकता है।
मैं यथासाध्य प्रयास करूँगा, महाराज!

हमें अमृपुर पर फिर से आक्रमण करना चाहिये।
इसके लिए हमें और आयुध की आवश्यकता होगी।
हम लोग चन्द्रगिरि को चावल देकर उनसे आयुध ले सकते हैं।
टैक्स के रूप में चावल एकत्र करने के लिए हम ताकत का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।
हाँ, महाराज! जमीन्दार गरीबों को मुफ़्त में चावल क्यों देते हैं?
वीर सिंह औरसेनापति अमरसिंह टैक्स के रूप में चावल वसूल करने के तरीकों पर विचार-विमर्श करते हैं।
यदि दूसरे लोग अपनी उपज का आधा देते हैं तो जमीन्दारों को....
.... वे बड़े आराम से दो-तिहाई दे सकते हैं!
गाँववाले जितना चावल चाहते हैं उतना रघुनाथ उन्हें बेच देता है।
हेमा, घबराओ नहीं, तुम बाद में पैसे दे देना। वह बहुत दयालु है।
चावल बाँटना बन्द करो।
पहले राजा का टैक्स अदा करो।
यह एक नया टैक्स है। चावल से हमें अस्त्र-शस्त्र मिलेंगे।
लेकिन मैं पहले ही टैक्स दे चुका हूँ।

हम भूखे मर जायेंगे
हमें चावल के बदले अस्त्र-शस्त्र लेने हैं।
सर, कृपया हमारा चावल मत ले जाइये
हमें इसकी परवाह नहीं।
शान्तिपुर में उपजा चावल चन्द्रगिरि क्यों जाये, यह समझ में नहीं आ रहा।
सर, हम आप से निवेदन करते हैं। चावल मत ले जाइये!
हमारा पीछा न करो। हम तुम्हें चावल नहीं देंगे।
गाड़ियाँ एक पहाड़ी मार्ग से गुजरती हैं
एक फाँसा सिपाहियों के सरदार को खींच लेता है।
आक्रमण!

सरदार जैसे ही गिरता है.....
गाँववाले सिपाहियों पर काबू पा लेते हैं
हम लोग तुम्हें हानि नहीं पहुँचाना चाहते। हमें चावल अपने घर ले जाने दो।
चावल ले जाओ और जमीन्दार को पैसे दे दो।
हमें मेहरबानी करके छोड़ दीजिये। हम लोग केवल अपने सरदार का आदेश-पालन कर रहे थे।
अभी नहीं! गाँववालों को घर पहुँचने दो।
क्या यह वही व्यक्ति है जो फाँसी से बच गया?
हम कोतवाल को खबर भेज देंगे। वह तुम्हें छुड़ाने का इन्तजाम कर देगा।
क्रमशः

ईंधन बचाओ

वीणा के दादा-दादी एक महीने के लिए ठहरने आये थे । "अच्छा, तो तुम्हारी गर्मी की छुट्टियाँ कैसी रहीं?" वीणा के बालों को सहलाती हुई दादी ने पूछा ।

"ओह! यह अद्भुत था।" वीणा ने कहा । "सुप्रिया के साथ मेरा समय बड़े ठाट के साथ कटा । और जानती हो, दादी, मैंने भोजन बनाना सीख लिया । तथा सुधा चाची और ममी ने भी भोजन पकाते समय ईंधन बचाना सिखा दिया!"

"अच्छा, ऐसा है?" दादी ने पूछा और वीणा ने ऊर्जा बचाने के जो नुस्खे सीखे थे दादी को बताया ।

दादीने एक लम्बी सांस लेते हुए कहा, "लगता है, एक महत्वपूर्ण बिन्दु पर विचार नहीं किया गया है और वह पूरे परिवार द्वारा किया जा सकता है ।"

"क्या है वह दादी?" वीणा ने बड़ी उत्सुकता से पूछा । उसके माता-पिता भी बड़ी रुचि के साथ सुन रहे थे ।

"अच्छा!" दादी ने कहना शुरू किया । "मैं देखती हूँ कि बहुत घरों में, जिनमें तुम्हारा घर भी शामिल है, सारा परिवार एक साथ भोजन नहीं करता । हर व्यक्ति अपनी सुविधा के अनुसार आता है, खाता है, चला जाता है । इस तरह भोजन को हरेक के लिए बार-बार गरम करना पड़ता है । यह मूल्यवान ईंधन की बर्बादी है । इसके अतिरिक्त, यह भोजन की पौष्टिकता को नष्ट कर देता है । यदि परिवार के सभी सदस्य एक साथ भोजन करें तो इससे बचा जा सकता है । इससे पारिवारिक मैत्री भावना भी सुदृढ़ होगी ।"

"तुम ठीक कहती हो माँ," ममी ने कहा । "मैं यह निश्चित कर लेने की कोशिश करूँगी कि भोजन का समय परिवार का समय हो ।"

दादी ने प्रसन्न होकर वीणा को सीने से लगा लिया । "यह बहुत अच्छा होगा, और कभी-कभी भोजन में देर हो जाये तो फिर से गरम करने की बजाय खाने को हण्डी या हॉट केस में रख सकते हो ।"

वीणा और उसके परिवार के लिए एक और मूल्यवान पाठ!

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

सिन्धु से सैन्धव

"**सा**गर का जल नमकीन क्यों है?" लोक कथाओं का यह लोकप्रिय विषय है। लवण-वाहक विशाल पोत के भग्नावशेष और समुद्रमंथन करनेवाले समुद्र, पवन और मेघों के युद्ध के बीच, ये कथाएं बताती हैं कि समुद्र का पानी कैसे खारा हो गया। वास्तव में जब नदियाँ समुद्र की ओर प्रवाहित होती हैं तब मार्ग में पड़नेवाली शिलाओं की सतह से खनिज लवण तथा अन्य पदार्थ अपने साथ बहा ले जाती हैं। ये सब पदार्थ घुल कर समुद्र में मिल जाते हैं।

जब सूर्य के ताप से जल बाष्प बन जाता है तब जल में निहित लवण की मात्रा एकत्र हो जाती है और कुछ नमक का समाहार बन जाता है। लवण प्राप्त करने के लिए समुद्र के पानी को भूमि पर विशेष रूप से तैयार किये गये छिछले गर्त में नहर द्वारा प्रवाहित किया जाता है। जब पानी बाष्प बन कर सूख जाता है तब गढ्ढों में खेदार नमक जमा रह जाता है। इसे एकत्र कर घरेलू प्रयोग के लिए साफ किया जाता है - अक्षरशः 'धरती का लवण' !

तुम्हारा प्रतिवेश

पानी के बिना, रेगिस्तान में

हम सभी जानते हैं कि पौधों को जीवन निर्वाह और संवर्द्धन के लिए जल की आवश्यकता होती है। शाद्वलों को छोड़ कर रेगिस्तान में हमें पानी नहीं मिल सकता। फिर भी वहाँ पौधे उगते हैं। उन्हें नागफनी कहते हैं । नागफनी को भी अन्य पौधों की तरह जल की जरूरत होती है। फिर ये कैसे जीवित रहते हैं जब कि सामान्य रूप से मरुभूमि में वर्षा नहीं होती? नागफनी में, जैसा कि तुम जानते हो, पत्तियाँ नहीं होतीं। लेकिन उनके मोटे डंठल जल पात्र के समान होते हैं जिनमें पानी एकत्र रहता है और सूखे की लम्बी अवधि तक पौधे को जीवित रखता है नागफनी की लम्बी जड़ें भी उनके चाएँ ओर दूर-दूर तक फैली होती हैं और वर्षा होने पर यथा सम्भव पानी एकत्र कर लेती हैं। तुम गमलों में नागफनी उगा सकते हो और नियमित अन्तराल पर उन्हें पानी दे सकते हो।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

सरीसृपों में भीमकाय

दलदल, काले शान्त सरोवर, नदियाँ तथा समशीतोष्ण जलवायु के जंगलों में से बल खाती हुई जाती नहरें सरी सृपों यानी रेंगनेवाले जानवरों में भीमकाय - मगरों, एलिगेटरों तथा मकरों के आवास-स्थल हैं। पृथ्वी पर पायी जानेवाली २३ जातियों में सबसे विशाल है एस्टुएराइन अथवा खारे जल का घड़ियाल।

यह २० फुट से भी बड़े आकार का हो सकता है और बजन में लगभग एक टन का हो सकता है। यह देखने में डरावना लगता है खासकर जब यह कीचड़ भरे तट पर धूप सेंकते समय अपने विशाल जबड़ों को खोल कर अपने तीक्ष्ण नुकीले दाँतों का बीभत्स क्रमबिन्यास प्रदर्शित करता है।

घड़ियाल जमीन की अपेक्षा पानी में अधिक चैन महसूस करता है, यद्यपि यह जलस्थलीय प्राणी है। इसके भोजन में पानी में चलनेवाला पक्षी, कछुआ तथा कभी-कभी जंगली सूअर और मवेशी जैसे बड़े जानवर भी शामिल हैं।

घड़ियाल लगातार २० मिनट तक पानी के अन्दर रह सकता है और जमीन पर १४ कि.मी. की गति तक जा सकता है।

अपना बौद्धिक स्तर विकसित करो

भारत-भ्रमण पर चल पड़ो!

१. गरबा नृत्य देखने के लिए किस राज्य का भ्रमण करोगे?

२. जड़वा और सेन्टीनेलिज आदिवासी कहाँ रहते हैं?

३. सन् १९३० में दक्षिण भारत का एक स्थान नमक सत्याग्रह के लिए प्रसिद्ध हो गया। वह कौन-सा स्थान है?

४. किस राज्य से एक अदद में काँसे का आईना मिल सकता है?

५. एक राज्य में तीन बीहू त्योहार मनाये जाते हैं। वह कौन-सा राज्य है? त्योहारों के नाम क्या हैं?

(उत्तर ६६ पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा
चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक
दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

NARAYANA MURTY TATA

NARAYANA MURTY TATA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न ९२), डिफेन्स आफिसर्स कलोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

विजयी प्रविष्टि

अकेलेपन का शिकार
मिला सबका दुलार

बधाइयाँ

फरवरी अंक के पुरस्कार विजेता हैं :
मीनू सराफ
C/o. अशोक कुमार सराफ
७, जे.एल. नेहरू रोड, पो. रानी गंज
प. बंगाल - ७१३ ३४७.

'अपने बौद्धिक स्तर की जाँच करो' के उत्तर

१. गुजरात
२. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
३. वेदारण्यम
४. केरल में अरनमुला
५. आसाम : माघ बीहू, काती बीहू, बोहग बीहू

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

CHANDAMAMA (HINDI) APRIL 2004 ... NO. TN/PMG(CCR) 594/03-05
REGD. WITH REGISTRAR OF NEWSPAPER FOR INDIA NO.1114/5... POST WITHOUT PREPAYM...05
FOREIGN